मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख सलंग अंक १३७ सितम्बर-२०१८

केरल के पीडियो हेतु सडक पर लोगो से राहत हेतु धन बटोरते पू. श्री राजा तथा अपने विद्यालय के उनके सहपाठी गण

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

1

2

3

(१) प.पू. लालजी महाराजश्री का २१ जन्मोत्सव शिकागो (अमेरिका) मंदिर में मनाया गया। इस अवसर पर केक काट कर प.पू. लालजी महाराजश्री और श्रीराजा को केक खिलाते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री। (२) शिकागो (अमेरिका) मंदिर के २० वे पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री और आई.एस.एस.ओ. के संतो के साथ और सभा में दर्शन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री (३) विसिया सिद्धपुर में श्री हनुमानजी का १२० वाँ पाटोत्सव अवसर पर दर्शन हेतु।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - १२ ● अंक : १३७
सितम्बर-२०१८

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत
स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ८२३८००१६६६
मो. ९०९९०९८९६९
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in
मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	छप्पन भोग	०६
०४.	श्री हरिकृष्ण को भजो	०८
०५.	गुरुपूर्णिमा के पवित्र अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आशीर्वचन	१२
०६.	संतो की तपस्या	१४
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१९
०८.	सत्संग बालवाटिका	२१
०९.	भक्ति सुधा	२४
१०.	सत्संग समाचार	२७

श्री स्वामिनारायण

अस्मदीयम्

एक निष्कामी का वर्तमान दृढ हो उसे इस लोक तथा परलोक में भगवान से दूर नही रहेगा । उपर से कभी उसका उद्देश्य कम नही हो । हम लोग यहाँ पर स्थिर है वह भी यहाँ के हरिभक्तो के अति निष्कामी दृढ भाव से ही है । जो निष्कामी भाव से हम लोग हजार गाँव के बाद भी है तो भी उनके पास है । और जो निष्कामी वर्तमान में काच्यप है वह भी हमारे पास है । तो भी लाख गाँव के अन्त में है । और हमें निष्कामी भक्त के हाथ से सेवा अच्छी लगती है । (व.ग.म.- ३३)

यह अलौकिक वचनामृत में से हम उपदेश लेकर निष्कामी वर्तमान दृढ करे । सर्वोपरि श्रीहरि अपने उपर खुश रहेगे और आप के हाथ की सेवा स्वीकार करेगे ।

श्रावण महीने में सभी हरिभक्तोने हिंडोला का दर्शन किये तथा लाभ प्राप्त किया । वर्षाऋतु में उत्सव पर उत्सव आते है । भाद्र सुद-११ जलजीलणी एकादशी के श्री गणपतिजी का वरघोडा, विजया दशमी दशहरा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का जन्मोत्सव आदि उत्सवो का आप दर्शन करके अपना कल्याण और मोक्ष प्राप्त करें ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

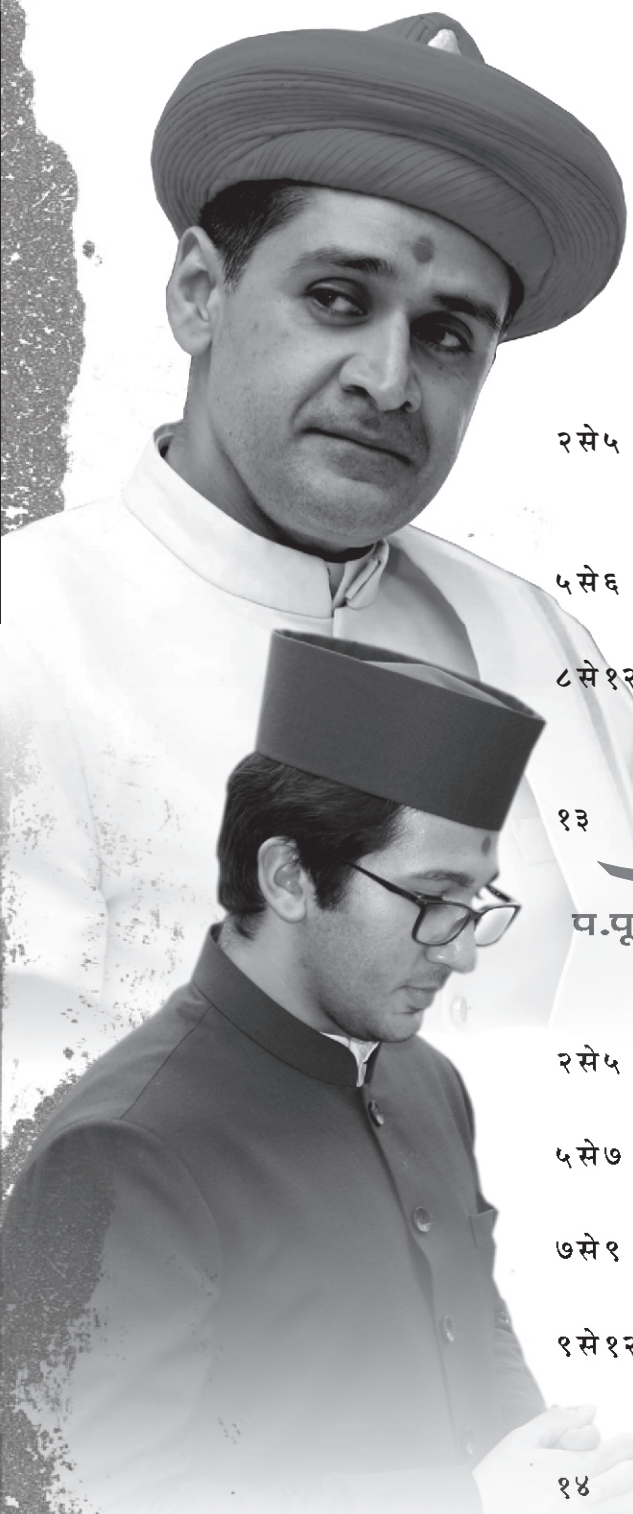

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अगस्त-२०१८)

२ से ५ श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो द्विदशाब्दी (२० वाँ पाटोत्सव) पाटोत्सव महोत्सव उनके सानिध्य में मनाया गया ।

५ से ६ श्री स्वामिनारायण मंदिर केनेडा टोरन्टो दशाब्दी महोत्सव उनके सानिध्य में मनाया गया ।

८ से १२ अमेरिका ज्योर्जिया में ''देवस्य'' का भूमि पूजन महा महोत्सव, स्वयं के शुभ सानिध्य में धर्मकुल की शुभ उपस्थिति में मनाया गया ।

१३ स्वदेश आगमन ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अगस्त-२०१८)

२ से ५ श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो द्विदशाब्दी (२० वाँ पाटोत्सव) महा महोत्सव स्वयं की उपस्थिति में मनाया गया ।

५ से ७ श्री स्वामिनारायण मंदिर जैंकसन विले - मीसीसीपी (अमेरिका) आगमन ।

७ से ९ श्री स्वामिनारायण मंदिर न्युजर्सी और कोलनिया (अमेरिका) में आगमन ।

९ से १२ अमेरिका ज्योंजीया मोंट ''देवस्य'' में भूमि पूजन महामहोत्सव स्वंय की उपस्थिति और धर्मकुल की शुभ उपस्थिति में मनाया गया ।

१४ स्वदेश आगमन ।

छप्पन भोग

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

हमारे भारतीय उत्सव परम्परा में प्रत्येक वर्ष के दिन मंदिरो में ठाकुरजी को छप्पन भोग रखा जाता है । इस उत्सव की शुरुआत और छप्पन व्यंजनो की कथा प्रत्येक भक्त को जानना आवश्यक है । परम्परा से मनाये जाने वाले इस उत्सव की महिमा ज्ञात होने से उसको आनंद कुछ और ही होता है । उसमें भी छप्पन भोग का उत्सव एक मोक्ष दायक कथा से जुडा हुआ है । जब इस कथा का ज्ञान होगा तो भगवान को रखी जाने वाले व्यंजनो की कमी नही होगी । तो आईए जानते है कि किसके याद में छप्पन भोग रखा जाता है । परम ब्रह्म परमात्मा लीलापुरुषोत्तम श्री कृष्ण महाप्रभु व्रज के प्रेम लक्ष्य वाले भक्तो को भक्ति में आधीन होकर अनंत बाल लिलाये कर रहे थे । उसी सयम अति उत्तम पवित्र कल्याणकारी गोवर्धन लीला किये । उसमें तर्जनी अँगुली पर गिरीराज गोवर्धन को धारण किये । जब इन्द्र को अत्यधिक अहंकार हो गया । तब श्रीहरि व्रजवासियो के तरफ से इंद्र प्रकोप को रोककर महाप्रभु ने गोवर्धन पूजा किये । इस प्रकार अभिमानी ईन्द्र नाराज हुए । और उनकी सत्ता में आने वाले वर्षा रुपी शस्त्र से व्रजवासियो को यमुना की धारा से सागर में भेजने वाले पापी इरादे से प्रलयकारी बारह मेघो को आदेश दिये कि व्रज सागर में चला जाये वहाँ तक प्रलयकारी वर्षा करो । इन्द्रराजा के आदेश से सेवक बारह मेघ अपनी पूरी शक्ति से व्रजवासीयो पर जल तांडव करने लगे । व्रजवासी इन्द्र का प्रकोप मानकर भगवान श्री कृष्ण के शरण में आये । श्रीहरि कहते है कि जिस गोवर्धन की पूजा की गई उसकी शरण में जाने से हमारी सभी की रक्षा होगी । श्रीहरि व्रजवासी और गौ धन तथा घर उपयोगी वस्तुए लेकर गिरीराज के पास आ गये । तब सम्पूर्ण जगत के अधिपति परमब्रह्म परमात्मा के लीलामात्र से बीस हाथ उपर उठाकर मध्य में श्रीकृष्ण खडे होकर कनिष्ठा अंगुली पर एक्कीस कोस क्षेत्रफल वाले गोवर्धन पर्वत को धारण करके पूरे व्रजवासियों की रक्षा किये । गोप-गोपी, ग्वालबाल, गाय, ग्वाल इत्यादि अनंत श्रीकृष्ण के सामने देखकर स्तुति करने लगे । लगातार सात दिन तक मेघराज शक्तिपूर्वक वर्षा किये । उस समय गोवर्धन पर्वत के नीचे आश्रय ले रहे गो-गोपी, गाये श्रीकृष्ण के मुखारविंद के सामने देखते ही, भूख, प्यास, नींद, आदि तृप्त हो जाती थी । सप्ताह अधिशीघ्रता से बीत गया । इन्द्र के जल तांडव के बाद व्रजवासी भयहीन होकर घुमने लगे । यह देखकर इन्द्र का अभिमान गिर गया । और जो व्रजवासी परमब्रह्म परमात्मा को सहारा लिये ये वह इन्द्र को पता नही था । स्वयं किये गये अक्षम्य अपराधसे डर कर इन्द्र राजा कामधेनु गाय के दूधसे श्रीहरिजी का महाभिषेक करके क्षमा माँगकर स्तुति किये । उसी दिन से दूधसे भगवान का अभिषेक करके भगवान से जन्म-जन्मान्तर में किये गये । अपराधकी क्षमा याचना की जाती है । भगवान तुरन्त क्षमा करते है

। यह प्रत्यक्ष प्रमाण देखकर इन्द्र की कहानी सुनकर आदि-अनादि से हरि तथा हर को दूधसे अभिषेक करते है। पाँप का प्रायश्चित अतिबलवान महाभिषेक विधिसेवा है।

सात दिनो तक श्रीहरि महाप्रभु की अन्न-जल की सेवा से वंचित रहे व्रजवासियों ने अत्याधिक पश्चाताप हुआ। अर्थात् देश काल परिस्थितवस सेवा में चूक जाने के कारण उससे मुक्ति के लिए व्रजवासियो ने मन में निश्चित किया की श्रीहरि बालकृष्णजी प्रतिदिन आठबार प्रातः काल से लेकर शयनावस्थातक समय समय का भोग लगाया जाये। इसलिये कुल छूट गये सात दिन के एक दिन का आठ भोजन सात से गुना करे तो छप्पन का अंक आता है। अर्थात् व्रजवासी मिलकर घर-घर से अनेक श्रीहरि को प्रिय चार प्रकार के पदार्थ (१) लेय (२) चोस्य (३) भक्ष्य - भोज्य के रस से परिपूर्ण भोग बनाकर कार्तिक सुद प्रतिपदा के दिन मिलकर नंदजी के घर पर आकर भवन के मध्य में विराजमान श्री बालकृष्णाजी को छप्पन भोग की छप्पन पदार्थो को श्रीहरि के सामने रखा गया। तथा प्रेमी भक्तो के भक्ति के आधीन होकर श्रीजी छप्पन भोग खा गये। अंत में व्रजवासियोने प्रार्थना करके क्षमा याचना किये। छप्पन भोग को खाकर समस्त व्रजवासियो की जन्मान्तरो की भोजन कराने की ईच्छा को पूरा किये। इस में तो कई गोपियो तो मात्र श्रीहरि को खिलाने के लिए व्रज में जन्म लेने की माँग रखी थी।

दिन में आठ बार अनेक भोजन से प्रेम करने वाले व्रजवासियोने सात दिन तक गोवर्धन धारण के दिनो को गुणा करके छप्पन भोज की लीला किये। यह परमम्परा आज भी गाँव - गाँव में मंदिर-मंदिर में मनाया जाता है। इसे अन्नकूट उत्सव भी कहा जाता है। अन्न अर्थात् अनाज कूट अर्थात् समूह भले उस अन्नकूट में पचीस-पचास या सैकडो प्रकार के भोव्य हो उसे छप्पन भोग ही कहते है। दिपावली के त्योहार पर भगवान के प्रगट दिवस पर प्रतिष्ठा दिवस और पाटोत्सव में छप्पन भोग रखा जाता है। उस छप्पन पदार्थो का चयन प्रत्येक प्रांत में अलग-अलग होता है। छप्पन भोग के साथ ही साथ गोवर्धन पर्वत की (भारत का पर्वत) पूजा स्थापना करने कि विधिवैष्णव सेवा प्रकार में वर्णित है। अन्नकूट स्वयं पाक अर्थात् मुमुक्षुओ द्वारा स्वयं तैयार कियाग या हो वही ठाकुरजी को रखने योग्य होता है। बाहर या बाजार से खरीदकर छप्पन भोग - अन्नकूट की परिभाषा में नही आता है। भगवान भाव के भूखे है। भोजन के लिये नही। सच्चे हृदय के भाव से भक्त जो भोजन तैयार करता है उसे ठाकुरजी प्रत्यक्ष भोग लेले है। और जो लोग दूसरे के यहाँ से या बाजार से लाकर रखे ठाकुरजी तो दर्शन करते है, लेकिन जिस में मुमुक्षुओ का सहयोग नहीं होता है वे पदार्थ छप्पन भोग में नहीं आता है। जैसे गोपिका ये छप्पन प्रकार की ती वे सभी अपने घर से एक-एक वानगी बनाकर लाती तथा उसी प्रकार हरिभक्त भी गाँव में अपने घर से एक-एक, दो-दो पदार्थ बनाकर लाये वही भोजन भोग कहा जाता है। विदेश में आज भी हरिभक्त मंदिरो में अपने घर पर तैयार अन्नकूट बनाकर लाने की परम्परा बड़े महाराजश्री प.पू.श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने प्रणाली शुरु करवाया था। ये सेवा आज भी हरिभक्त कर रहे है। छप्पन भोग की सूची - बूंदी, मोतीचूर, अडदिया, चावल का लड्डू, मगका हसलवा, मोहनथाल, मेसूर, बरफी चूरमका पैंडा, श्रीखंड, रबडी, काजूकतरी, पकवान, बासुंदी, खीर, चना का हलवा, सूजीका हसवा, लपसी, सक्कर गुंजा, विरंज, चन्द्रकला, गुलाब जामुन, केशर पेंडा, खाजली, मालपुवा, गणगण, सेव, शक्कर पारा, मड्डा, दहीं, घी, मक्खन, पूरी, रोटी, रोटला, पापड, चनादाल, मगदाल, अरहर की दार, खीचडी, भात, दलहन, आलूबडा, गाठिया, मिक्स भजिया, कचौरी, पेटिश, दहींवडा, रायता, जलेबी, पातराउ, खांडवी, खमण और शाक इत्यादि।

श्री हरिकृष्ण को भजो

- शा. स्वा. निर्गुणदासजी (अमदावाद)

कोकिलकवृतविहरति योऽक्षरेक्षरपदाक्षरमुक्तपतिः पुरुषविधो
विर्धिविधिहरीश्वरमुख्यबुधाः ।
शिरसिवहन्ति ते समुदितं किल येन मुदा हृदि तमजं भजे
भवहरं हरिकृष्णमहम् ॥१॥
प्रकृतिमया गुणा न च भवन्ति हि यत्र हरौ इति निगमागमा
अपि वदन्ति च निर्गुणकम् ।
इति सगुणं गणैरपि युतं परदिव्यशुभैर्हृदि तमजं भजे भवहरं
हरिकृष्णमहम् ॥२॥
शमदमकौशलस्मृतितपोबलकान्तिभगश्रुत-
शुचिसत्यतास्ववशतार्जवकीर्तिमुखाः ॥
अपरिमिता गुणा ध्रुवतयात्र वसन्ति सदा हृदि तमजं भजे
भवहरं हरिकृष्णमहम् ॥३॥
प्रकृतिपराक्षरे बृहतिधामनि मूर्तिधरैर्निगमनिजायुधैश्च
निजपार्षदमुख्यगणैः ।
उरूय उपस्यतेऽपि रमया रमणीयतमुर्हृदि तमजं भजे भवहरं
हरिकृष्णमहम् ॥४॥
निखिलभगैश्च योऽक्षरपदे दिवि
देवगणैरखिलविभूतिभिर्विभवभूमिरुपास्यत ए ।
रतिपतिदर्पहारमणरम्यकरुपनिर्धिर्हृदि तमजं भजे भवहरं
हरिकृष्णमहम् ॥५॥
विजितमनोभवा भुविभजन्ति च यं सततं शमदमसाधनैः
प्रशमितेन्द्रियवाजिरयाः ।
प्रकटितमानुषाकृतिमिमे मुनिदेवगणा हृदि तमजं भजे भवहरं
हरिकृष्णमहम् ॥६॥
द्विजवृषसाधुगोमुनिगणानवितुं भुवि यो वृषभवने
वृषादधृतजनिर्जनको जगताम् ।
प्रकृतिभुवामपि प्रशमितुं यदधर्मकुलं हृदि तमजं भजे भवहरं
हरिकृष्णमहम् ॥७॥
ऋषिभिरभिष्टुतो नृपगणैर्नतपादतलः श्रुतिशिरसां
गणैरुदितसूज्ज्वलकीर्तिरसौ ।
अतिकृतिभिः प्रगीत इति यः कविकोकिलकैर्हृदि तमजं भजे
भवहरं हरिकृष्णमहम् ॥८॥
॥ इति योगानन्दमुनिविरचितं भजनाष्टकम् ॥

श्री स्वामिनारायण

भगवान श्री स्वामिनारायण के परमहंसो में कवि संस्कृत के विद्वान और शास्त्रीय संगीत की धुरन्धर थे। उसमें योगानंद मुनि तीन अंगो में पारंगत संगीत संस्कृत साहित्य और कविता की रचना कुशलता के साथ शूरवीर भी थे। इसी कारण से स्वयं भगवान श्री स्वामिनारायणने कवियो में ये लोग कोकिल कंठ है ऐसा कहकर सम्मान दिये थे। और अपने गले में से फूलो का हार निकाल कर उन्हे पहना दिये थे। ऐसे श्रीहरि के कृपापात्र योगानन्द मुनि ने भगवान की भक्ति किये। धर्म के नियम में रहना तथा मोक्ष प्राप्त करना ही जीवन का अन्तिम लक्ष्य है। उसके लिये परमेश्वर की कैसे भजन करे इस अष्टक में दर्शाया गया है।

कोकिलकवृतविहरति योऽक्षरेक्षरपदाक्षरमुक्तपतिः पुरुषविधो
विर्धिविधिहरीश्वरमुख्यबुधाः।
शिरसिवहन्ति ते समुदितं किल येन मुदा हृदि तमजं भजे
भवहरं हरिकृष्णमहम् ॥१॥

जो परम ब्रह्म परमात्मा दिव्य साकार मनुष्याकृति धारण करके सदैव अक्षर में अर्थात् अक्षरमुक्तो के समूह में विचरण करते है। अनन्तकोटी अक्षरमुक्तो के पति नियन्ता अधिपति ऐसे परमब्रह्म परमात्मा सर्वावतारी भगवान श्री कृष्ण पुरुषोत्तम नारायण पाँच सो परमहंसो के साथ जगत के अनन्त जीवो को अक्षरमुक्त पद पर पहुचाने के लिये विचरण करते है। इसी प्रकार मानव शरीर में पुरुषाकृति धारण करते रहे परमेश्वर की विधिपूर्वक ब्रह्माजी शिवजी, और विष्णुजी और दूसरे परमात्मा स्वरुप के ज्ञानवाले ज्ञानी-विद्वान भी पूजा-पाठ प्रार्थना करते है। इसी प्रकार वेदो की श्रुतियो की समूह भी प्रथम स्थान पर परमेश्वर का गान करते है। उन्ही की प्रार्थना से अज्ञान रुपी अंधकार अहम और ममत्व रुपी माया के अज्ञान को नाश करने के लिए भवबंधन से छूटने के लिये मोक्ष प्राप्त करने के लिए हे जीव आप इस कलियुग में मनुष्याकृति धारण करके विचरते भगवान श्रीहरिकृष्ण नाम धारी श्री स्वामिनारायण भगवान की भजन करे।(१)

प्रकृतिमया गुणा न च भवन्ति हि यत्र हरौ इति निगमागमा
अपि वदन्ति च निर्गुणकम्।
इति सगुणं गणैरपि युतं परदिव्यशुभैर्हदि तमजं भजे भवहरं
हरिकृष्णमहम् ॥२॥

प्रकृति से उत्पन्न होने वाले गुणो जो सत्वगुण रजोगुण और तमोगुण और उनके विकार कभी भी मनुष्याकृति धारण किये हुए श्रीहरि में नही रहता है। ऐसा वेद-स्मृति-श्रुति के वाक्य कहते है। और इसी कारण से उनके स्वरुप को निर्गुण तथा अर्थात् मायाजन्य किसी भी प्रकार के गुण से रहित है। ऐसा होते हुए वे परमेश्वर सगुण मनुष्याकृति मनुष्य जैसा रुप धारण करके दिव्य तथा समस्त कल्याणकारी शुभ गुणो से युक्त है। जो अक्षरमुक्तो से भी परे है। अर्थात् उनके महिमा तथा स्वरुप को अक्षर मुक्त भी नही ज्ञात कर सकते है। ऐसे जीव के हृदय में स्थित अज्ञान रुपी अंधकार को तता अहँ और ममत्व रुपी माया के अज्ञान को नष्ट करने के लिये और भवबंधन से छूटने के लिए और मोक्ष प्राप्ति हेतु हे जीव तुम इस कलियुग में मनुष्याकृति धारण करके विचरण करने वाले भगवान श्री हरिकृष्ण नाम धारी श्री स्वामिनारायण भगवान का भजन करे।(२)

शमदमकौशलस्मृतितपोबलकान्तिभगश्रुत-
शुचिसत्यतास्ववशतार्जवकीर्तिमुखाः ॥
अपरिमिता गुणा ध्रुवतयात्र वसन्ति सदा हृदि तमजं भजे
भवहरं हरिकृष्णमहम् ॥३॥

मनुष्य शरीर धारण करके विचरण करने वाले ऐसे भगवान श्री स्वामिनारायण स्वरुप मे मुख्य रुप से सदैव स्थिर होकर शम इन्द्रियो के विकार का शमन करने वाले। दम-इन्द्रियो का दमत करने वाले दमन करे। कुशल, निपुण थता ज्ञान शक्ति, क्रिया शक्ति ईच्छा शक्ति को कियातान्वित करने की कुशता है। स्मृत-भूत भविष्य और वर्तमान तीनो काल का जिन्हे स्मरणक रहता है। तथा भक्तो पर कृपा करना तपइन्द्रियो को विषयो में न जाने देना उसी स्वरुप में बनाते रखना। बल-जगत की उत्पत्ति स्थिति प्रलय में बलवान समर्पण वाला, शक्ति शाली, क्रांति, दिव्य तेज स्व प्रकाशवाला बनाये रखना। भग-सृष्टि का सर्जन विसर्जन और स्थिति जिस में है और ज्ञान सद्गुणो की उत्पत्ति स्थान। श्रुत-सर्वशास्त्रो के ज्ञाता जिसकी महिमा वेदो की कृतियो में शास्तरो के वचनो में सुनी जाती है। शुचि-जो सर्वत सदैव शुद्ध और

पवित्र है जिसका नाम लेने से जगत के प्राणी शुद्ध और पवित्र हो जाता है। सत्यता - जो वाणी बोलते है सत्य होता है। मन, क्रम वाणी से जो तीनो काल में भूत, भविष्य एवम् वर्तमान समाया है। स्व-वशता-सम्पूर्ण जगत को अपने अधीन रखते है। लेकिन स्वयं किसी के अधीन नही है। आर्जव-मन वाणी क्रिया से एक समान, पवित्रता और कोलमपन से युक्त है। कीर्ति - सम्पूर्ण ब्रह्मांड में आदरणीय जिसके नाम का यश - कीर्ति का गुणगान वेद, उपनिषद, शास्त्र लगातार करते है। जिस में अनगिनत कल्याणकारी सद्गुण स्थित है। ऐसे जीव के हृदय में स्थित अज्ञानरुपी अहंकार और अंधकार और मायारुपी माया के अज्ञानको नाश करना तथा भववर्धन और अंधकार और मायारुपी माया के अज्ञान को नाश करना तथा भवर्धन से छूटने तथा मोक्ष प्राप्त करने हेतु। हे जीव तुम इस कलियुग में मनुष्याकृति धारण करके विचरण करने वाले भगवान श्री हरिकृष्ण नाम धारी श्री स्वामिनारायण भगवान का भजन करे।(३)

प्रकृतिपराक्षरे बृहतिधामनि मूर्तिधरेर्निगमनिजायुधैश्च
निजपार्षदमुख्यगणैः।
उरूय उपस्यतेऽपि रमया रमणीयतमुर्हृदि तमजं भजे भवहरं
हरिकृष्णमहम् ॥४॥

काल, माया और प्रकृति से परे अर्थात् जहाँ ये तीनो नही पहुंचते है। ऐसे जो अक्षर है उससे भी परे अक्षर जिसीक पूरी महिमा नही समझ सकते है . ऐसे अपने ब्रह्मधाण में सदा साकार मूर्तिमान रहते है। और अपने युद्धास्त्रो से जो शंख, चक्र, गदा, पदम एवम् सव्यं के मुक्य पार्षदो एवम् सेवक सहित रहते है। ऐसा निगम और आगम बताते है। अर्थात् वेद, उपनिषद स्मृति और शास्त्र ऐसा वर्णन करते है। और उनकी उपासना सुंदर स्त्री का रुप धारण करके साक्षात् लक्ष्मीजी अपने हृदय कलम में दिव्य साकार मूर्ति रुप में धारण की है। ऐसे जीव के हृदय में अंधकार रुपी अहं और ममत्वरुपी माया के अज्ञान को नाश करने के लिए और भव बंधम से छूटने के लिए तथा मोक्ष प्राप्त करने के लिए, हे जीव तुम इस कलियुग में मनुष्याकृति धारण करके विचरण करने वाले भगवान श्री हरिकृष्ण नाम धारी श्री स्वामिनारायण भगवान का भजन करे।(४)

निखिलभगैश्च योऽक्षरपदे दिवि
देवगणैरखिलविभूतिभिर्विभवभूमिरुपास्यत ए।
रतिपतिदर्पहारमणरम्यकरुपनिधिर्हृदि तमजं भजे भवहरं
हरिकृष्णमहम् ॥५॥

स्वयं संकल्प मात्र से ही जिसकी उत्पत्ति हुए है ऐसे समस्त ब्रह्मांडो में जन्म जेने लावे जीव देवलोक और स्वर्गलोक के देवताओ का समुदाय और समग्र निभूति स्वरुप ईश्वर, विराट पुरुषो इस पृथ्वी पर भूमि उपर मनुष्य शरीर धारण विचरण करते भगवान की उपासना करते है। जो इतना सुंदर और कमनीय रुप धारण किये है। जो साक्षात् कामदेव के रुप को अहंकार को मिटा दे। और अनेक प्रकार की दिव्य अद्भूत लीलाये करते अपने दिव्यरुप से जीवो को चित्र को आकर्षित कर लेने वाले ऐसे जीव के हृदय में व्याप्त अज्ञान रुपी अंधाकर अहम् और ममत्व रुपी माया के अज्ञान को नष्ट करने के लिये और भवबंधन से छूटने के लिये तथा मोक्ष प्राप्त करने के लिये हे जीव तुम इस कलियुग में मनुष्याकृति धारण करके विचरण करने वाले भगवान श्री हरिकृष्ण नाम धारी श्री स्वामिनारायण भगवान का भजन करे। (५)

विजितमनोभवा भुविभजन्ति च यं सततं शमदमसाधनैः
प्रशमितेन्द्रियवाजिरयाः।
प्रकटितमानुषाकृतिमिमे मुनिदेवगणा हृदि तमजं भजे
भवहरं हरिकृष्णमहम् ॥६॥

इस पृथ्वी के उपर शरीर धारण करके जिन्होने कठोर तपस्या किया तथा मन को जीत लिया ऐसे महान योगियो, तपस्वियो ऋषि मुनियो ने सदा सर्वदा शम, दम, आदि कठोर साधना करके और स्वयं को ईन्द्रियो को जीतकर भजन करते है। ऐसा मनुष्य रुप धारण करने वाले भगवान श्री सहजानंद स्वामी श्री स्वामिनारायण मुनियो तथा देवताओ का समूह तथा पुरुषार्थ वाले पुरुष भजन करते है। ऐसे जीव के हृदय में स्थित अज्ञानरुपी अंधकार अहं और ममत्वरुपी माया के अज्ञानको नाश करने के लिए और भवबंधन से मुक्त होने के लिए और मोक्ष प्राप्ति हेतु हे जीव इस कलियुग में मनुष्याकृति धारण करके विचरने वाले भगवान

श्रीहरिकृष्ण नामधारी श्री स्वामिनारायण भगवान की भजन करो।(६)

द्विजवृषसाधुगोमुनिगणानवितुं भुवि यो वृषभवने
वृषादधृतजनिर्जनको जगताम् ।
प्रकृतिभुवामपि प्रशमितुं यदधर्मकुलं हृदि तमजं भजे भवहरं
हरिकृष्णमहम् ॥७॥

इस भयानक कलियुग के कष्टो को सहन करते हुए ऐसे द्विज मनुष्यो अर्थात् सन्ध्या-वंदना आदि कर्म करके भगवान को प्रसन्न करने वाले, वर्णः, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य र् शूद्र और आश्रमो में - ब्रह्मचर्याश्रम गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम और संन्यास आश्रम धर्म,सत्य, दया, शौच, आदि साधुओ - सरल और सादा त्याग वैराग्यपूर्ण जीवन जीने वाले मनुष्य, मुनिगण - संसार से उदास होकर एकांत में ईश्वर की आराधना करते हुए महात्मा की रक्षा करने में पृथ्वी उपर धर्मदेव हरिप्रसाद विप्र के घर उनकी अर्धांगिनी भक्ति देवी के द्वरा जगत में जन्म लिये है। प्रकृति से उत्पन्न हुई सभी मायिक गुणो अन्तःशत्रुओ, काम, क्रोध, लोभ आदि का प्रशमन करना और् अधर्मकुल जो असत्य, अहिंसा, व्यभिचार, दुष्कर्म, न खाने योग्य का भक्षण पापाचार जैसा अधर्म का नाश करने वाले अवतरित ऐसे जीव के हृदय में व्याप्त अज्ञान रुपी अंधकार अहं और ममत्वरुपी माया के अज्ञान को दूर करने वाले भवबंधन से मुक्त होने के लिए तथा मोक्ष प्राप्ति हेतु हे जीव तुम इस कलियुग में मनुष्माकृति धारण करके विचरण करने वाले भगवान श्रीहरिकृष्ण नाम धारी श्री स्वामिनारायण भगवान का भजन करो।(७)

ऋषिभिरभिष्टुतो नृपगणैर्नतपादतलः श्रुतिशिरसां
गणैरुदितसूज्ज्वलकीर्तिरसौ ।
अतिकृतिभिः प्रगीत इति यः कविकोकिलकैर्हृदि तमजं भजे
भवहरं हरिकृष्णमहम् ॥८॥

मनुज देह धारण करके विचरण करते भगवान श्री स्वामिनारायण ने बड़े-बड़े ऋषि मुनियो पाँच सौ परम हंस सदैव प्रार्थना और स्तुति करते है। और बडे-बडे राजा, महाराजा के समूह उनके पैरो को प्रक्षालन कते है। और चरणो की वंदनाक रते है। वेद की श्रुतियाँ एवम् शास्त्रो के वचन उनके उज्जवल कीर्ति का गान करते है। कवि स्वयं के रसमय वाणी से और नये कृतियो रचनाओ से श्लोको अष्टको से कविताओ से देश गान करते है। उसी प्रकार से यहाँ पर मैं कवियो में को किल अर्थात् कोय लकी उपमा मेरे ईष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण ने दिया है। तो मैं भी उनकी रचना की स्तुति करता हूँ। ऐसेवीर जीव में स्थित अज्ञानरुपी अंधकार एवम् अहम् और ममत्वरुपी माया का अज्ञान नाश करने और भवबंधन से छूटने तथा मोक्ष प्राप्ति हेतु हे जीव तुम इस कलियुग में मनुष्याकृति धारण करके विचरण करने वाले भगवान श्रीहरिकृष्ण नाम धारी श्री स्वामिनारायण भगवान भजन करो।(८)

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव आदि देवो की थाल-रसोई की सूची

थाल का विवरण	रसोई	
चुरमाकालड्डू	रु. १,८००/-	रु. १०,०००/-
मगशका लड्डू	रु. १,८००/-	रु. १०,०००/-
बूंदी के लड्डू	रु. १,८००/-	रु. १०,०००/-
मोतीचूर के लड्डू	रु. १,८००/-	रु. १०,०००/-
मोहनथाल	रु. १,८००/-	रु. १०,०००/-
मगशपूरी	रु. २,०००/-	
मालपूवा	रु. २,०००/-	रु. ११,०००/-
खीरपूरी	रु. २,३००/-	रु. १२,०००/-
अडदिया का थाल	रु. २,५००/-	रु. १२,०००/-
साटा का थाल	रु. २,५००/-	रु. ११,०००/-
शीखंड पुरी	रु. २,५००/-	रु. १७,०००/-
ड्रायफ्रुट हलवा	रु. २,५००/-	रु. १२,०००/-
बासुंदी पुरी	रु. २,७००/-	रु. १७,०००/-
खीर-मालपुवा	रु. २,७००/-	रु. १४,०००/-
गुलाब जामुन	रु. ३,३००/-	रु. १२,०००/-
मैसुब	रु. ३,५००/-	रु. १२,०००/-
काजू-बदाम मैसुब	रु. ४,०००/-	रु. १७,०००/-
सत्तरधाम का थाल	रु. २,५००/-	

स्थायी सुरक्षित थाल रु. ५,००१/-
तथा रु. १०,०००/-
ठाकोरजी को शायं का थाल रु. ५००/-

Mo. : 8238001666

गुरुपूर्णिमा के पवित्र अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आशीर्वचन

- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर - अहमदाबाद ता. २७-७-१८ को देव के प्रांगण में हमें बैठने को प्राप्त हुआ । उसी स्थान पर सर्वावतारी स्वामिनारायण भगवान स्वयं विचरण किये थे । देव की प्रतिष्ठा किये है । सभा किये है । संतो-भक्तो को खुश किये है और कल्याण किये है इसी जगह पर हम सब बैठे है । आप को महिमा ज्ञात है । इसलिये आये है इस कारण से हमे उपदेश देना जरुरी नहीं है । मैने देखा है । ३०० से ४०० कि.मी. की दूरी से संत-भक्त देव के दर्शन हेतु आये है । गुरु पूर्णिमा तो मात्र निमित्त है । आज प्रातः पूजा करते विचार आया कि आज गुरु पूर्णिमा है । दत्तात्रेय ने २४ गुरु किये थे ऐसा कहा जाता है । परंतु मेरे मतानुसार गुरु करने से पहले प्रत्येक का गुण देखे । जिस में से गुण देखा उसी में ही दोष भी देखे होगे । लेकिन दत्तात्रेय ने दोष को त्याग कर गुणो का वरण किया था । जो जीवन में सकारात्मक बदला व लाये वही सत्य है । २४ गुरु नही हो सकते गुरु एक ही हो सकता है यो सिंहासन पर विराजमान है । (श्री नरनारायणदेव और नरनारयणदेव पीठ के स्थान पर स्वयं श्रीहरि आपडीने उत्तर विभाग में हमारे गुरु स्थान पर नियुक्त किये है । बडे व्यक्ति स्वंय अपने लक्षणो कोनही बताते है) और इसी में कल्याण है ।

इन देवो के उम्बर - ये संत-हरिभक्त इस में भी चौक में पीछे बैठे है हमारे हरिभक्त, उस पंक्ति वाले भगत झालावाड के लगते है ? यहाँ आगे आइए आप को माला पहनाते है क्यो कि आगे बैटे लोगो को सभी माला-हार पहनाते है पीछे वाले पर कौन ध्यान दे ? धोती वाले हरिभक्त को बुालकर पूछे किस गाँव के है ? बणोल, बंणोल तो अभी जल्दी गये थे । ये धोती रखिये ये हमारे पार्षद वनराज भगत भी बणोल के ही है । अब में बणोल की रसप्रद बात कहता हूँ । बणोल गाँव के राधाकृष्णदेव की मूर्ति में एक छिपकली निकली ।

अर्थात् हरिभक्तोने निर्णय किया कि जीणोद्धार करके सब अच्छा किया जाये । मिलकर सभी हरिभक्त हमारे पास आये । हमने समय दिया । छिपकली के माध्यम से प्रोग्राम हो जाता है । देव का दर्शन होता है । संतो-हरिभक्तो से मिलने का अवसर प्राप्त होता है । तो यह छिपकली धन्य है ? हमने उस गाँव में कहा था कि अवसर हो तो ही मेहमान आयेगे । गाँव वाले रसोई में तथा स्वागत हेतु रुके थे । दूसरे दिन जाये तो प्रतिदिन की तरह जो बक्त प्रतिदिन आते है मिलते है यह अच्छा लगा । इस लिये छिपकली को थैंक्स । लेकिन हर जगह पर छिपकली नही निकलेगी यह ध्यान रखियेगा ।

(प.पू. महाराजश्रीने चमेली के सफेद पुष्प का हार पहने रखे थे उस पर बात किये) देव की निष्ठा और सेवा ये इस सम्प्रदाय की नींव है । हमे हार पहनने का शौक नही है . फिर भी पहन रखे है । कारण प्रत्येक फूल में सेवा की भावन और सुगंधहै । इस हार को जब हम अपने निवास स्थान पर रखते है तब सुगंधही सुगंध(चमेली) व्याप्त हो जाती है । ये हार ५००० फूल से बनता है । ऐसे सात - आठ हार प्रतिदिन शास्त्री स्वामी (पू. निर्गुणदासजी स्वामी) ठाकुरजी की लिये बनाते है । श्रद्धाकी वस्तु हैना कौन कहता है कि भजन नही होता, भगवान के लिये नही करते ? ऐसा कहने वाला मूर्ख है, उसी बुद्धइ में कमी आ गयी है । इसे दवा की आवश्यकता है । इस सत्संग में सतयुग हे इसमें भी विशेष करके इस नरनारयणदेव के दरबार में अपने घर से इत्र डालकर साफ करते है । किसी अपेक्षा से नहीं कि हमें कुछ मिलेगा । हमें याद है कि हम लालजी महाराज के उम्र के ते तब हमने दर्शन किये ते । हरिभक्त का नाम

नही बतायेगे, देव के निज मंदिर के कचरे को साफ करके उपस्थित धूल कोसिर पर लगाते थे महिमा इसे कहते है। मंदिर में दूसरी धूल तो आती नहीं। भक्तो के पैर में चिपक कर मिट्टीं मंदिर में जाती है उस धूल को सिर पर लगाने वाले के लिए देव की महिमा की बात करना कहाँ तक योग्य है।

छोटी से छोटी सेवा देव के लिए होती है। यह एक बड़ी वस्तु है । अहमदाबाद मंदिर में ही नही, गाँव के प्रत्येक मंदिर में तन, मन और धन से हरिभक्त सेवा करते है। समय निकलना कठिन है। आज शुक्रवार का कार्य दिवस है। इतनी भीड़ धक्का मुक्का कितने तवकर खाना इसके बाद भी देव का होकर आये है। इस कारण से आ सके है। भविष्य की पीढी में यह बात जाये ऐसे माहौल देते रहे । दूसरी कई वस्तुए प्राप्त होगी । लेकिन ये भगवान मिलने दुर्लभ है। अन्न, धन, ईज्जत, वस्त्र महारजने दिया है किसी को प्रोब्लेम ? यदि कोई प्रोब्लेम है तो स्वभाव का है। कारण अनंत: हम सब मनुष्य है। भगवान सिवाय हम और आपं स्वभाव से दूर नहीं है। लेकिन इन स्वभाव को छोडकर मंदिर की सीढियाँ चढते है यह महत्वपूर्ण है। देव के लिए जब मनुष्य समय निकालता है तन, मन से सेवा करते है धन का दान कता है। मान लीजिये १०० रुपया की नोट है रुपया को हम छूते है। छूने वगैर पेट्रोल तो भरा नही जायेगा । जिन हरिभक्तोने यहाँ नोट रखा होगा । वे अपने बेटे की देने के लिए दस बार विचार करेगे । यहां जरा सा भी विचा किये विना रख देते है। यह रुपया तो अधिक है। लेकिन ४ आना आट आना तो अभी चलन में नही है उसका मूल्य अधिक है। हरिभक्तो का पैसा लेकर हम बगल में रखते है कारण कि यह रुपिया हरिभक्तो के पसीने की समाई है। यह रुपये देव के लिये प्रयोग किया जाता है। 'आँगन' के लिए भक्तजनो ने दान लिखवाया। एक हरिभक्त ने अभी रसीद दिखाया है। अर्थात् तन, मन, धन से सेवा होती है । समर्पण की जो भावना है इसी से अपना सम्प्रदाय उज्जवल है।

हम हमेशा कहते है कि, पहले भी कहे है, गुरु एक ही है, भगवान एक ही है और ये सिहांसन पर बैठे है। (श्री नरनारायणदेव की तरफ अंगुली से इशारा किये) दूसरे चक्कर में पडना आवश्यक नही है आप सभी जानते ही है। जो कुछ भी हे देव का उंबरा, देव का चरण, देव की मूर्ति यह कोई प्रतिमा नही है। महाराज प्रत्यक्ष है। महाराज का वचन है हम इस मूर्ति में प्रत्यक्ष रहते है। इस में दो मत नहीं है। देव का होक रहे। समाप्त हुआ। विना काम की मेहनत करने की आवश्यकता नहीं। शिक्षापत्री में २१३ श्लोक हमने कहाँ लिखा है। हमारी सात पीढी में या आठवी पीढ़ी में किसी दिन २१३ श्लोक कहाँ आया ? हमने कभी किसी से ऐसा करने के लिए कभी कहा नहीं ? महाराजने जो शिक्षापत्री में जो कहे है उसी का पालन करे तो अधिक है. यह अपने लिए पूर्ण है। शिक्षापत्री का विवेचन "शिक्षापत्री भाष्य" में है . इउससे अधिक विवेचन सत्संगिजीवन मैं है। इससे अधिक अपने कुछ करना नही है । हम चहाँ पर बैठे है उसाक कारण महाराजने यहाँ पर पैर रखे है। इस देव, संत, हरिभक्त, बड़े से लेकर छोटे तक सबके प्रति प्रेम से जुडे रहे। इस पद का (आचार्यपद) गौरव है। व्यक्ति का नही। इस पद की जितना अधिक गौरव और महिमा बनाये रखेगे उतना ही सम्प्रदाय का विस्तार और विकास होगा। स्थान का कौरव नही होता है तो भगवान पर छोड देना चाहिए। यह उम्बरा नही रख सते। आप के गाँव में यही भगवान है और यहाँ पर भी है। उसमें कमी नही करना चाहिए। पूनम को आईए या एकमको आइये कभी भी आइये भगवान तो वही रहेगे। ऐसे भगवान नही मिलते है . आने वाली पीढी में किसी भी प्रकार यह माहौल दे सके ऐसी शक्ति महाराजी प्रदान करे । यह माला अच्छी लगी और सुंदर भी है।

सत्संग हेतु गाँवो में जानेकी जिम्मेदारी जिन संतो की ने लिया है । उन प्रत्येक संतो का नाम प.पू. महाराजश्री गांव के नाम के साथ स्वयं पढकर विशेषकर बोले है। एक दो गाँव बढाना हो, या छूट जाते हो तो हमें कोठार में अज्ञानित करियेगा लेकिन ऐसा आग्रह मत रखइयेगा कि संत इतने दिन तक हमारे गाँव में रहने चाहिए। कारण त्संग का विकास, विस्तार तथा

गाँव बढते जा रहे है। यह फलिया ये धोती पहनने वाले जो भक्त है उनके आगे की परम्परा बड़ो से पूछे तो ज्ञात होगा कि बड़े लोग मंदिर में बैठकर कथा-वार्ता करते थे। वचनामृत पढे या सत्संगिजीवन पढे या भूषण पढे सत्संग की जिम्मेदारी संतो की तथा हमारी है लेकिन संयुक्त रुप से सबका है। महाराज सत्संग किसी एक को लिखकर नही दिये है। इसके अलावा आप सबको संतुष्टि मिले ऐसा प्रयत्न करेगे। सप्ताह में दो नये प्रोजेक्ट आते है मंदिर बन रहे है।

श्री नरनारायणदेव आप कभी को खूब आशीर्वाद दे। उनके होकर रहे। ये पुराने मंदिर देखे, यहाँ पर (सभा मंडप) बैठे-बैठे देव का दर्शन कर सकते है। इस सभा मंडप में कई कथाये हुई है। कई भक्त बैठकर भजन किये है। यहाँ पर बैठने का आप को मौका मिला है। संतोने गाँव की जिम्मेदारी लिये है। उन संतो को धन्यवाद हरिभक्त भी संतो का ध्यान रखते है। यह सत्संग, देव, संत, हरिभक्त, भाइयो, बहनो, बेटे, बेटियों को एक समूह में होकर देव का होकर रहे। आप सभी को अपने परिवार सहित श्री नरनरायणदेव का आशीर्वाद मिले। पीछे देखे, ऋषि मुनियो कि तरह ये हरिभक्त तपस्या कर रहे है। वेस बका मंगल करे ऐसी नरनारायमदेवे क चरणों प्रार्थना।

इस अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री ने आशीर्वाद में श्री नरनारायणदेव की महिमा कहते हुए बोले, हम सभी के गुरु मानो या माता-पिता ये नरनारायणदेव हे और इनके कारण ही हमे सब सुखी है। इस देव की निष्ठा आप सभी के जीवन में है। तो भी उत्तरोत्तर बढती जा रही है। ऐसा श्री नरनारायणदेव के चरणो में वंदना करते है।

अंत में प.पू. बड़े महाराजश्री सभा में विजामान नही हुऐ। उसके बाद भी उनके शब्द गुरु पूर्णिमा के अवसर लिखना अति आवश्यक है। लिखकर लेखन को विराम देता हूँ। सम्प्रदाय में संतो एवम् भक्तो श्रीजी महाराज को और श्री नरनारायणदेव को अलग मानते है या अधिक या कम मानते है। ऐसे संतो से विमुख होना तथा ऐसे संतो के मुख से कथा भी न सुने। (प.पू. बड़े महाराजश्री।

संतो की तपस्या

- चंद्रकान्त मोहनलाल पाठक (गाँधीनगर)

लगभग आधी रात को सुमारे भगवान श्रीहरि पाँच, छ काठियो के साथ एक गाँव के किनारे से जा रहे थे। उस समय कोई हरिभक्त नजदीक में रहता होगा। वह लघु शंका हेतु जगा होगा। वह देह्यानिधि। हे दयानिधिऐसा बोल रहा था। आवाज सुनकर श्रीहरि खडे हो गये। हरिभक्त तो सो गया होगा लेकिन श्रीहरिने सुरा खाचर से पूछे। ये कौन बोल रहा था ? सुरा खाचर अपनी शैली में बोले ये तो मोतीराम तरवाडी पेशाब करने उठा होगा। क्या बोल रहा था ? दया नही, दया नही ऐसा बोल रहा था। ऐसा बोलकर रहा था ? हाँ किसमें दया नहीं ? किसमें क्या आप में दया का अंश नही। ऐसा क्यो कर रहे हो ? प्रचंड ठंडक में साधु घेला को किनारे सुलाते हैं। ठंडी सहन न होने के कारण यह गड्ढा खोदकर उसमें सो जाता है. और शरीर को रेत से ढक देता है। केवल मुँह दिखायी देता है, सुबह तक ऐसे पडा रहता है।

और आप ? क्या करते है। अक्षर ओरडी में एक मन रुई के दो गद्दे दो रजाई ओढकर सो जाते है। आप को क्या खपर बाहर कितनी ढंडक पडती है। मनुष्य बाहर निकले तो दाँत बजता है। मुह में बाप्य निकलती है।

सुरा खाचर ! श्रीहरिने कहा, कल से सभी साधुओ को धर्मशाला में सुलाये और दादा खाचर से कहना प्रत्येक साधु को दो, गद्दे रजाई दे। एक बिछाने के लिये दूसरा ओढने के लिये दे।

પવિત્ર શ્રાવણમાસમાં દેશ-વિદેશના આપણા મંદિરોમાં હિંડોળા દર્શન

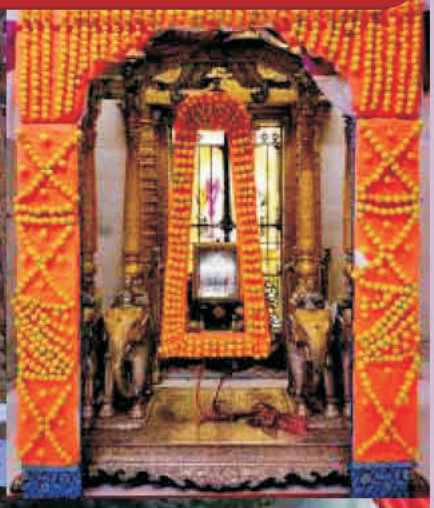

અમદાવાદ

ઓકલેન્ડ - ન્યુઝીલેન્ડ ફૂલોના વાઘા અને વનવિચરણ

મહેસાણા

જેતલપુર

આશપુર રાજસ્થાનના એમ.એલ.એ. ૩૫૦ કિ.મી. ચાલીને જેતલપુર શ્રી રેવતીબળદેવજી હરિકૃષ્ણ મહારાજના હિંડોળાના દર્શને પધાર્યા ત્યારે તેમનું સ્વાગત કરતા સંત હરિભક્તો

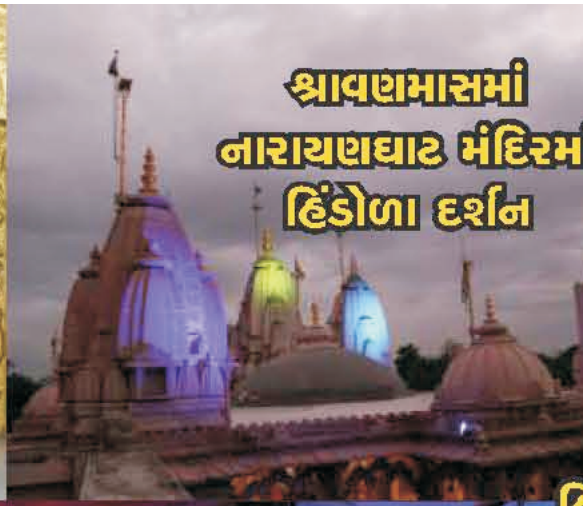
શ્રાવણમાસમાં
નારાયણઘાટ મંદિરમ
હિંડોળા દર્શન

અમરનાથ

વનવિચરણ

હિંડોળા દર્શનનું ઉદ્‌ઘાટન કરતા પૂ. મહંત સ્વામી કાલુપુર તથા અન્ય સંતો

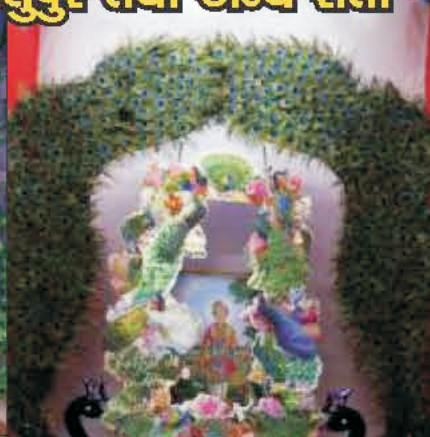

હાશ્રમ

એપ્રોચ - બાપુનગર

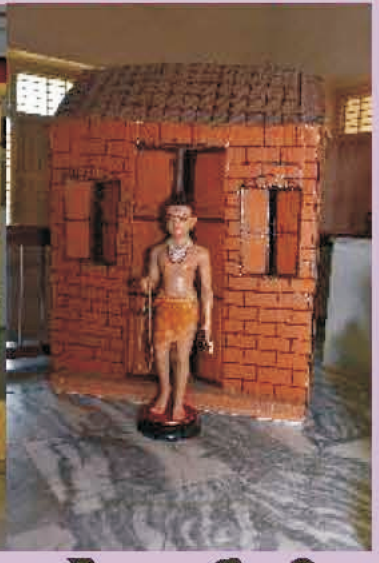

મોટેરા - અમદાવાદ

માણેકપુર ચૌધરી

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

मूली में गेला जोषी के घर की प्रसादी नीम की डाल

भगवान श्री स्वामिनारायण अक्षरधाम में से अपने मुक्तो को साथ लेकर इस पृथ्वी पर अनंत जीवो के कल्याण हेतु आये इन मुक्तो में कई संत, हरिभक्त, बाई, राजा, वृक्ष, नदीयो के रुप का स्वीकार किये है।

श्रीजी महाराज को साक्षात मिले हो ऐसे मानव देह धारी का दर्शन अब हमे नहीं मिल सकता है। लेकिन श्रीजी महाराज के साक्षात् स्पर्श को प्राप्त किये हो ऐसे कई वृक्ष है। गढडा में खीजडो, जेतलपुर की बोरसली, राजकोट की बोरडी इत्यादि इसके उदाहरण है।

काल क्रम के अनुसार ये वृक्ष भी नष्ट होते है। लेकिन उसके अवशेषो का दर्शन होता है। ये अपनी अहो भाग्य है। संसार में लोग इजिप्ट (मिश्र) स्थित ममी देखने जाते है। वह उन व्यक्तियो के शब है, ये कौन थे ? कैसे ये हमे ज्ञान नहीं है वे अपने रिश्तेदार भी नही है।

यह तो ऐसे वृक्षो की बात है जिसका साक्षात पुरुषोत्तम नारायण से सम्बन्धथा। यह प्रसादी समान वस्तु का दर्शन बडे भाग्य से होती है। नंद संतो तो वृक्षो को भी साथ रखकर सत्संगी बनाते थे। धन्य है उन संतो की जिसके उच्च उदार भावना वृक्षो तथा जीवो के प्रति कृपा रखते थे।

भगवान स्वामिनारायण जब मूली में आये थे। तब एक बार घेला जोषी नाम के हरिभक्त के यहाँ आये। और उनके प्रांगण में नीम के वृक्ष के डाल के ऊपर उन्होने अपना झोला लटकाया था। कल्याण के धार देने झोली में से आज भी मूली में कल्याण का भोग देती है। झोली टाँगकर महाराज जीने कहा 'लीजिए भक्त अब तो हम यहाँ ही बैठे है।'' श्रीजी महाराज आज भी मूली मंदिर में साक्षात बिराजमान है।

जिस डाल पर श्रीजी झोली लटकाये थे। उस डाल का दर्शन आज भी हम स्वामिनारायण म्युजियम हाल नं. ४ में कर सकते है। लगातार कल्याण करने वाली डाली जो झोली को सम्भाले थी। उस डाली का दर्शन प्राप्त होगा। आज भी दर्शन करने से आप रोमांचित हो जायेगे। सभी हरिभक्त उसका दर्शन ध्यान से करियेगा तथा श्रीहरि के चेहरे की तरह ध्यान दीजियेगा।

– प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-अगस्त-१८

रु। १,५१,०००/- अ.नि. प.भ. श्री नंदलालभाई कोठारी (भालजा मंडल) अहमदाबाद पंचम पुण्य तिथि अषाढ वद-५ अवसर पर रुचिवाला सभी हरिभक्तो की ओर से

रु। १,००,०००/- प.भ. विसराम गोपाल पिंडोरिया, अ.सौ. पुष्पाबेन कांतिभाई पिंडोरीया, श्री ध्रुव कांतिभाई पिंडोरीया, जील्पाबेन ध्रुव पिंडोरिया और हिरलबेन कांतिभाई पिंडोरिया - गाम माधापर (कच्छ वर्तमान में आस्ट्रेलिया)

रु। ११,०००/- ठक्कर प्रवीणभाई आनंदजी, ध.प. बसंतीबेन कोठारी - कच्छ(भूज) ह. सांख्ययोगी नीताबेन

रु। ११,०००/- प.पू. लक्ष्मीस्वरुप अ.सौ. बड़े गादीवाला श्रीकी तरफ से

रु। ११,०००/- चिराग दिनेसभाई सोलंकी (मद्रास बेल्को कं. मे नौकरी मिलने के कारण) - मेमनगर

रु। १०,०००/- अ.नि. पंकजभाई (मोन्टुभाई) दशरथभाई पटेल के मोक्ष हेतु - ह. खोडीदास चतुरदास पटेल परिवार - कुंडाल

रु। १०,०००/- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला - अहमदाबाद

रु। ५,१००/- हार्दिक दिनेशभाई सोलंकी (लवजीभाई सोलंकी) - मेमनगर

रु। ५,००१/- एक हरिभक्त चुडजी - सुरेन्द्रनगर

रु। ५,०००/- कडिया कानजीभाई नारणभाई - राजकोट - ह. तेजेशभाई - बोपल

रु। ५,०००/- मीनाबेन के. जोशी - बोपल

रु। ५,०००/- अमृतभाई सेंधाभाई पटेल (कुंडालवाला) अहमदाबाद

रु। ५,०००/- हसमुखभाई पटेल - मारुसणा

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि अगस्त-१८

दि. ०१-०८-२०१८ पटेल नारणभाई शिवाभाई - ह. संजयभाई तथा नितिनभाई - मेहसाना

दि. १०-०८-२०१८ टोरेन्टो मंदिर - कैनेडा

दि. १२-०८-२०१८ श्री महिला मंडल स्वामिनारायण मंदिर बहनो का बालाशिनोर - प्रे. सां.यो. राजकुंवरबा तथा उषाबा

दि. १५-०८-२०१८ नरनारायणदेव युवक मंडल - मेहसाना - ह. भानुभाई अजयभाई, मितेषभाई, भरतभाई तथा प्रवीणभाई

(दोपहर) श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर - ह. अरुणाबेन

दि. १७-०८-२०१८ श्री सुमेशभाई पटेल - बोस्टन

दि. १८-०८-२०१८ शनाभाई शंकरभाई पटेल - घाटलोडीया - ह. विरेन्द्रभाई एस. पटेल

दि. १९-०८-२०१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर महिला मंडल बहनो का. ह. सां.यो. रंजनबा तथा नानीबा - विराटनगर

दि. २४-०८-२०१८ किरीटभाई गोकलदास पटेल - लवारपुरवाला

दि. २६-०८-२०१८ एक हरिभक्त हलवद - अहमदाबाद सां.यो. बा. - मोरबी

તા. ૨૬-૦૮-૧૮ એક હરિભક્ત હળવદ-અમદાવાદ સાં.યો. બા - મોરબી

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

चरणारविंद की महिमा

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

बाल मित्रो ! आज आप को एक मजेदार बात बताता हूँ. यह बात सारंगपुर की है। जीवा खाचर के घर के बरामदा में स्वामिनारायण भगवान पैर पैलाकर बैठे थे। महानुभावानंद स्वामी गुजरात से वहाँ पहुंचे थे। दंडवत किये और महाराज के चरणारविंद फैले थे। उसी जगह पर स्वामीजी पैरो को दबाने के लिये चरणारविंद के उपर हाथ रखे। इतने में महाराजने - चरणारविंद खीच लिया। पलाठी मार कर बैठ गये। स्वामीजी बोले, महाराज ! क्या आप नाराज है ? इस चरण की सेवा हेतु तो हमने घर छोडा है। महाराज ! इस चरणारविंद की सेवा हेतु हम संसार के कष्ट और तिरस्कार को सहन करते है। कोई गांव से गाली देकर निकाल देता है। कोई भिक्षा में धूल डाल देता है। कोई झोली को फाड़ देता है। ये सब हम सहन करते है। किस लिये ? इच चरणारविंद की सेवा हेतु तो हे दयालु आप क्यो चरणारविंद पीछे ले लेते है ? अब भगवान आप ही उत्तर दें।

स्वामी ! एकबात सुनिये। एक यात्री था। एक गाँव से दूसरे गाँव जाता था। यात्रा करते रहता था। थक जाने पर साम जाने पर कोई गांव आया। गाँव में बनिया की दुाकन थी। रात हो जाने के कारण ग्राहक आने बंद हो गये। इस कारण से वनिया ने दुकान बंद कर दी। बगल में घर के अन्दर रहता था। इस यात्री को लगा दूकान का बरामदा अच्छा है। रात में यही पर रहे। बरामदे में थोडी धूल थी। कही से झाडू लाकर वरामदा साफ कर दिया। कपडे लाकर पोछ दिया। बरामदा साफ करके सो गया। पूरी रात सोये रहा। सुबह उठकर दरवाजा खट खटाया। व्यापारी उटा, क्या है भाई ? क्यो दरवाजा खडखडा रहे हो क्यो इतने गुस्से में है ? यह यात्री ने कहा, जल्दी करो हमारी मजदूरी दे दो। विलम्ब हो रहा है। काहे की मजुरी ? क्यो रात को बरामदा साफ किये है कोई कम काम नही किया है। इस लिये दस सेर सोना चाहिए। व्यापारी ने कहा मैं तुमको यात्री जानकर कर बरामदे में सोने दिया। विराधी नही किया था। यह नही सोचते उपर से सोना माँग रहे हो। व्यापारी को ऐसा लगा कि इसे मनोचिकित्सक के पास ले जाना चाहिए। बरामदा साफ करने के लिए मजदूरी दो पैसे होती है, कोई दस सेर सोना नही होता है ?

स्वामिनारायण भगवान कहते है कि ''महानुभावानंद स्वामी ! आप की इस संसार यात्रा में ऐसा लगा कि सुख और शांति का सहारा है और आपने संसार का थोडा सा तिरस्कार सहन किया, घर का त्याग किया मान-अपमान सहन किये और अब माँग रहे है चरणारविंद की सेवा। ये सब हमने भी सहन किया है। स्वामी ! इसके बदले मैं चरण सेवा तो दस सेर सोना माँगने के समान है। यहाँ कुछ भी नहीं मिलेगा।

श्रीजी महाराज कहते है, ''स्वामी आप को पता ही होगा इस चरण की सेवा हेतु बड़े-बड़े योगी, महर्षि, तपस्वी की हाल खराब हो गये। बड़े-बड़े सौभरी जैसे च्यवन ऋषि जिन्होने हजार वर्ष तक तपस्या किये थे। इस चरणारविंद के साक्षातकार के लिए पूरी उम्र तपस्या में बीत जाती है। तब भी चरणारविंद की सेवा नही प्राप्त होती है। स्वामी ! और आप को कोई दो अंजली मिट्टी दे दिया तो, कहते है सर्वाधिक सहन किया है। लो ! चरणारविंद की सेवा ऐसे कही मिलती है।

महानुभावानंद स्वामी कहते है, अच्छा महाराज ! जैसे आप खुश रहे वैसे ही। हमने बरामदा में झाडु लगाया है यह हम मान रहे है। ये हमारी भूल है। चरणारविंद की सेवा नही चाहिए आप खुश रहिए।

बाद में श्रीजी महाराजने पैर फैलाया, लिजिए

दबाइये, महानुभावानंद स्वामी ! ये तो आप को अधीर करना चाहते थे । शेष आप तो पूर्व के मुक्त हो । आप जैसे संत की जो सेवा करेगा उसका कल्याण हो जायेगा । जिसको आप की सेवा का अवसर मिलेगा उसका पहले का पुण्य होगा । स्वामिनारायण भगवान कहते है कि ''जिसका संत सेवा में रुचि होती है, रुचि अर्थात् लगाव, श्रद्धा वह संसार सागर तर जाता है।

''संत सेव्या तेणे सर्वे सेव्या, सेव्या श्रीहरि भगवन:
ऋषि मुनि सेव्या देवता, जेने संत कर्या राजी मन ।''

भगवान कहते है कि ''जिसको संसार का दोष नही व्याप्त होता है । तथा आप जैसे संत की सेवा किया । उसका बेडा पार हो जाता है । स्वामी ! यह चरणारविंद हाजिर है । बाद में स्वामीने भगवान के चरणारविंद की सेवा किये ।

मित्रो ! कितनी अच्छी बात है, जीवन में याद रखे कि हमारे उपर भगवान की अपार कृपा है । जिस कारण से हम सरलता से नरनारायणदेव, आचार्य महाराज संतो और दिव्य सत्संग प्राप्त हुआ है । इसके बदले में हम भगवान के लिए कुछ भी नही करते है । भगवान दयावान है ये बदला नही माँगते है । लेकिन भाव से भगवान की भक्ति करना, भजन करना, सेवा करना यह अपनी जिम्मेदारी है।

•

हिम्मतवान की सहयाता हरि करते है

- नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

संघे शक्ति कलियुगे ..... कलियुग में संघ में शक्ति होती है । संगठन द्वारा जो कार्य किया जाता है वह सफलता देता है । संगटन की सफलता के लिये सभी सदस्यो में प्रेम महत्वपूर्ण स्थान रखता है । जिस कार्य को समुदाय द्वारा मिलजुलकर प्रेम से किया जाता है तो भगवान उसमें सहायता करते है । और सफलता प्राप्त होती है । आज की यह बात ऐसा ही कुछ अवगत करेगी ध्यान से पढे ।

संसार के सभी प्रेम मे माता का प्रेम श्रेष्ठ होता है । बच्चो ! आप को भी आप की माँ कितना अधिक प्रेम करती है । आप को माँ का प्रेम कितना अच्छा लगता है । सही बात है न ? माता मनुष्य में प्रेम दर्शाये ऐसा नही है, पशु, पक्षी की माँ भी अपने बच्चे के प्रति प्रेम रखती है । पशुया पक्षी के बच्चे को पकडने पर उसकी माँ तुरन्त अपने बच्चे की रक्षा के लिये दौडती है ।

पक्षियो को ज्ञात न होने के बाद भी बच्चे का जन्म देने से पहले उसके रहने के लिए सुन्दर घोषला बनाने लगती है। जन्म देने के बाद बच्चे की देख-रेख अच्छे से करती है ।

पक्षी जगत मैं टिटहरी का नाम आप सभी सुने ही होगे । ऐसा ही एक टिटहरी का जोडा समुद्र के किनारे मिलजुल कर रहते थे । ऐसे सदभावी जोडे मैं एक बात पर हमेशा झगडा होता था । उसका कारण समुद्र टिटहरी के अंडे को डूबा देता था। जब अंडा रखे इसके बाद दोनो भोजन की खोजनें चले जाते थे । तभी समुद्र में ज्वार-भाटा के कारण अंडा समुद्र में चला जाता था । ऐसा एकबार नही कई बार हो चुका था । अब मादा टिटहरी अपने पति से दूसरी जगह रहने का आग्रह की लेकिन पति को अपना घर प्रिय होने के कारण वह दूसरे जगह नही जाना चाहता था । पत्नी को अंडे के चिंता के कारण दोनो में

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर की ओफिस नंबर

Mo. No. : 82380 01666

WhatSapp No. : 99099 67104

झगडा हो जाता था । प्रत्येक बार अंडा समुद्र की लहरो के साथ समुद्र में चला जाता था । अब की बार मादा टिटहरी काफी क्रोधित हो गई । और बोलने लगी । मुझे अब समुद्र के किनारे रहना ही नही है । हम अन्यत्र चले जाते है । उसके पति ने कहा तुम भयभीत नही हो । इस बार समुद्र हमें परेशान नही करेगा । यदि हैरान करेगा तो अबकी बार उसके सामने युद्ध करुगा तथा पराजित करुँगा । पति की ऐसी वाणी सुनकर शांत हो गई ।

इसबार फिर अंडा रखकर भोजन की खोजमें गये । आकर देखा तो अंडा गायब था । यह दशा देखकर मादा टिटहरी खूब क्रोधीत हुई । क्रोधित होकर बोलने लगी - ''पहले तो आप अधिक बोलते थे, यदि समुद्र अंडा ले जायेगा तो उससे युद्ध करुंगा । तथा पराजित भी करुँगा । मेरा अंडा वापस लाइये । नहीं तो समुद्र में डूबकर मर जाउगी ।''

पतिने पत्नी को शांत किया और समुद्र से विनय करने लगा कि भाई समुद्र ! आप तो विशाल हृदय वाले है । हमारे जैसे छोटे पक्षी को क्यों परेशान कर रहे है ? हमारे अंडे को वापस कर दे । लेकिन मदसे भरे समुद्र ने छोटी पक्षी की विनय पर ध्यान नहीं दिया ! और बोला की जो तुम्हारे से हो सके वह कर लेना । मैं तुम्हारा अंडा वापस नहीं करुंगा ।

समुद्र की घमंड भरी वाणी को सुनकर नर टिटहरी को अधिक क्रोधआया । उसने दूसरे टिटहरी के समाज को एकत्र किया । उनके साथ अपनी बात को रखा । सभी संगठित होकर समुद्र के साथ लडाई के लिए तैयार हो गये । दूसरे अन्य पक्षी भी इस समाज के निर्णय अनुसार कार्य करने के लिये संमत हुए । ऐसा प्रस्ताव पास हुआ कि ''हम सभी पक्षी मिलकर समुद्र में पत्थर डालेगे तथा समुद्र को ढक देगे ।''

तत्पश्चात सभी लोग मिलकर अपने अपने चोंच में पत्थर कंकड उठाकर समुद्र में डालने लगे । लेकिन इन छोटे पत्थरो से कही समुद्र सूख सकता था । लेकिन पक्षी परिश्रम करने लगे । पक्षीयो का श्रम देखकर समुद्र दया के स्थान पर मजाक करने लगा । ''आप सभी लोग एक होकर हमे पराजित करोगे । आप की क्या ताकत है । लेकिन पक्षियो की हिम्मत कम नहीं हुई अपना प्रयास दो गुना कर दिये । पक्षीयो का यह क्रिया - कलाप जोर सोर से चल रहा था । उसी समय विष्णु भगवान गरुड के उपर बैठकर जा रहे थे । बात को जानकर गरुडजी को आदेश दिये । आप इन पक्षीयो की सहायता करके टिटहरी का कष्ट दूर करे ।

गरुड पक्षीयो के राजा थे । राजा अपने प्रजा का दु:ख कैसे देख सके । प्रभु का आदेश मिलते ही वह तैयार हो गये । वह बड़े-बड़े पहाड लाकर समुद्र में डालने लगे । इस कारण से अल्प समय में ही सागर ढकने लगा । समुद्र को पता चला कि पक्षीयो के साथ गरुडजी मिल गये है । अब मेरा कल्याण नही है । समुद्र गरुड की शरणागति स्वीकार किये । गरुडजी से माफी माँगा । टिटहरी का अंडा वापस लाये तथा दिये गरुडजी पहाड तथा बड़े पत्थर डालना बंद कर दिये ।

मित्रो ! शायद आप को ज्ञात नही समुद्र में जो बड़े पहाड और पत्थर है उन्हें गरुड भगवानने डाला है । टिटहरी तथा दूसरे छोटे-छोटे पक्षीओ के मेल उत्साह से बिना थके हुए कार्य करते देखकर भगवान का आदेश हुआ तो पक्षीराज गरुड ने इन पक्षीयों की सहायता किये । इस सहायता से छोटे पक्षीयो से विशाल समुद्र हार गये । हिम्मत के साथ मिलकर जो काम किये उसमें भगवानने भी सहायता प्रदान किये । भगवान की सहायता से विनय निश्चित है । इसमें कोई शंका नही है ।

बाल मित्रो ! आप कोई भी कार्य मिल जूलकर प्रेम से सद्भाव से सच्चे दिशा में करेगे, सच्चा परिश्रम करेगे तो भगवान की सहायता मिलेगी । भगवान की सहायता से सफलता मिलेगी ।इस तरह की कहावत है कि ''हिम्मते मर्दा तो मददे खुदा'' बहादुरी से हिम्मत से कार्य करने से भगवान भी सहायता देते है । और उसकी विजय होती है । अपने ब्रस्त्रंद स्वामी भी कहे है ''जो होय हिंमत रे नरने उरमांही भारी, दृढता जोईने रे तेने मदद करे मोरारी ।''

श्री स्वामिनारायण

भक्तिसुधा

BHAKTI-SUDHA

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
(एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली) "दूसरे नियम के साथ 'ध्यान करने का भी अभ्यास करियेगा"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

जो सरलता से हो जाता है ऐसी प्रतिज्ञा सभी ले लेते है । प्रतिदिन हो जाने कला नहीं बल्कि जो वस्तु कठिनाई दे या हमसे ना हो सके ऐसी प्रतिज्ञा लेना चाहिए । सब से कठिन क्या है ? ध्यान धारण करना है । ध्यान जल्दी से नही होता है । तो इसका कारण क्या है । हम जब मूर्ति का दर्शन करते है तो गिलहरी की तरह ईधर-उधर देखते है । गिलहरी का ध्यान चारो तरफ रहता है । थोडी चलकर चारो तरफ देखती है । जब हम मंदिर में दर्शन करने जाते है तब अपना ध्यान पीछे की तरफ होता है कौन व्यक्ति है ? कौन हमें धक्का दे रहा है । सब धायन रखते है । परिणाम स्वरुप जब ध्यान करने बैठते है तब मूर्ति के साथ सब दिखाई देता है । 'ध्यान' किस लिए आवश्यक है । ध्यान के माध्यम से शरीर की वासना समाप्त होती है । हमारे शरीर के अन्दर जो वासना है मरते दम तक समाप्त नहीं होती है । ''वासना'' और ''आत्मा'' अलग नहीं होती है । ध्यान से दूर हो सकती है । सूई के नोक के बराबर भी वासना रहने पर ''मुक्ति'' नहीं प्राप्त होती है ।

महाराजने शिक्षापत्री के श्लोक नं. ११५ में लिखे है कि श्री कृष्ण भगवान तथा उनके सभी अवतारो को ध्यान करने योग्य है । श्रीकृष्ण भगवान की प्रतिमा भी ध्यान करने योग्य है । इसलिये कृष्ण को ध्यान करना हितकर है । मनुष्य जो कृष्ण का भक्त हो और ब्रह्मवेता हो तो भी ध्यान करने योग्य नहीं है ॥११५॥ इस बात का विशेष ध्यान रखे । 'ध्यान' केवल भगवान का करना चाहिए ।

और महाराजने वचनामृत में भी कहे है कि ''राधिका सहित ऐसे श्रीकृष्ण भगवान का ध्यान करना चाहिए'' । कई लोगो के मन में ऐसा प्रश्न होगा कि भगवान के अलावा किसी का ध्यान नहीं होगा । राधिकाजी की जगह पर श्रीजी महाराजने परम एकान्तिक मुक्त है । भगवान के साथ मुक्तामी है । उन्हे राधिका की उपमा दी गयी है । भगवान अपने परम एकांतिक भक्तो के साथ रहते है.

और बाद में ऐसा कहे है कि ''ध्यान करते समय मूर्ति न दिखाई दे तो भी ध्यान करिए कायर बन कर ध्यान नहीं छोडना चाहिए ।'' प्रयत्न करते रहना चाहिए । हमें प्रयत्न करते रहना है । जिस प्रकार गोरैया एक-एक तिन के से अपना धोषला बनाने का प्रयास करती है । उसी प्रकार हमें भी ध्यान के लिए जो साधन बनाये है एक-एक करके आगे बढना चाहिए । ''ध्यान के लिए साधन क्या है ?'' अष्टांग योग में आठ योग बताया गया है । उसमें ध्यान साँतवे क्रम पर आता है । ध्यान सिद्ध हो उसके पूर्व छ और पद होते है । जिसे करने के बाद ही ''ध्यान'' कर सकते है । इन ६ में पहला ''यम'' तो यम अर्थात क्या ? सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह होता है ।

(१) सत्य अर्थात् जो बात धर्म सहित हो और सबके हित का हो ऐसी बात को 'सत्य' कहते है । (हितप्रीत और मीठीवाणी)

(२) अहिंसा अर्थात मन, बचन और कर्म से किसी को पीडा न हो उसे अहिंसा कहते है ।

(३) दूसरे के धन का बलपूर्वक प्रयोग करके नहीं लेना ।

(४) स्त्री को पुरुष हेतु, पुरुष को स्त्री हेतु आठ प्रकार का त्याग, जो ब्रह्मधाम की प्राप्ति दे वह ब्रह्मचर्य ।

(५) अपरिग्रह अर्थात स्वयं विचार कर पदार्थ का संग्रह नही करना ।

दूसरा ''नियम'' नियम में शौच, संतोष तप, स्वाध्या, ईश्वर प्राणीण न है ।

(१) शौच अर्थात् बाह्य और आम्यान्तर (आंतरिक) ये दो प्रकार की शुद्धता होती है।

(२) संतोष ईश्वर ईच्छा से जो कुछ मिले उसमें ही संतोष करना।

(३) तप अर्थात् चांद्रायण आदिव्रत से शरीर की तप अर्थात् बाह्यतम ! आम्यान्तर तप में इन्द्रियो को संयम में रखना मन की सभी वस्तुए दे देना नही, वाणी का भी तप होता है।

(४) स्वाध्याय अर्थात् शास्त्रो का अध्ययन।

(५) ईश्वर प्राणिधान अर्थात् श्रीहरि का मन एवम् वाणी से चिंतन तथा शरीर से स्तुति और पूजा करना।

योग का तीसरा अंग है।''आसन'' आसन कई प्रकार के होते है । उसमें वह आसन करे जो आप से हो सके । प्राणायम को रोगनाशक तथा आसानो का प्रमुख कहा जाता है । इसके बाद प्राणायाम, प्राणायाम अर्थात् श्वास पर नियन्त्रण प्राणायाम मुख्य तथा तीन प्रकार का है । पूरक, कुम्भक और रेचक । पूरक अर्थात सांस लेना, कुम्भक अर्थात् श्वास रोकना तथा रेचक अर्थात श्वास छोडना होता है।

इसके बाद आता है 'प्रत्याहार' प्रत्याहार अर्थात् अनपी ईन्द्रियो को बाह्य जगत से अनासक्त करके आत्मा के तरफ ले जाना उसे प्रत्याहार कहते है। कछवा की तरह इंन्द्रियो को समेट कर रखना होता है। व्यर्थ का बोलना बंद, खाना इत्यादि सभी नियम में होना चाहिए जिससे इन्द्रियो 'मुक्त' होती है।

धारणा अर्थात् दृढ निश्चय के साथ एकाग्र हृदय से भगवान की मूर्ति में प्राम सहित मन का स्थिरीकरण को धारणा कहते है। धारणा का मूल ध्यान की सिद्धी है।

यमादि छ अंगो के अभ्यास से कर्मदोष कम होता है। तब सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय इन्द्रियो की पराधीनता से मुक्त गुण मैं जाता है। अनुभव जन्य है। उसके लिये प्रयास नहीं करना पडता है। क्रोध,, मानमाया, लोभ इन सभी बन्धो से मुक्त हो जाते है। और हम सरल - सहज, धैर्य, सौम्यता, मृदता, नम्रता से गुणआ जाते है। अर्थात् मन, बुद्धि, अन्तरआत्मा सब उपर आजाता है । चित्त का निरोधहो जाते है । चित्त का निरोधअर्थात् यह परिव्रतन शील संसार है। उस प्रभाव से मनुष्य मुक्त हो जाता है। रुकावटो से मुक्ति मिल जाती है। इससे बाद ध्यान करना सरल हो जाता है । अपना मन भगवान में प्रेम भक्ति की तरफ अग्रसर हो जाता है। अपने ध्यानावस्था में बैठने पर तुरंत भगवान मिल जाये सम्भव नहीं है। हम स्कूल में पढते है तुरंत कोलेज की डिग्री मिल जाये सम्भव नहीं है । इसी प्रकार आत्यन्तिक जगत में परमात्मा की प्राप्ति हेतु मेहनत करना पडता है।

जैसे हमें कोई वस्तु लेना होता है तो जब तक नहीं मिलती है अथक प्रयत्न करते है । शरीर की क्षमता से अधिक शरीर से काम लेजे है। कुछ भी करके वस्तु प्राप्त कर ही लेते है। हम संसार नकी वस्तु प्राप्त करने के लिए प्रयत्न नहीं छोडते है तो परमात्मा की प्राप्ति के लिए प्रतिदिन प्रयास करना चाहिए।

इस लिये यदि आप लोग कोई प्रतिज्ञा किये है तो करियेगा लेकिन ध्यान करने का भी अभ्यास करते रहें।

और एक नियम आप सभी निश्चित लेगे की हमारे द्वारा किसी की आँख में पानी न आये। क्योकि ? सबसे पहले अच्छे मानव बने। आप के द्वारा एक व्यक्ति के आँख आये तो सब बेकार है। और आज के दिन महाराज के चरणो में प्रार्थना आप सभी की प्रतिज्ञा पूर्ण हो।

●

स्वास्थ्य की कुंजी - योग

- ठक्कर वीणाबेन नरेन्द्रभाई (बोपल)

योग भारत की प्राचीन विरासत है। जिससे मनुष्य की शारीरिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक विकास होता है। योग शरीरी की एकता, श्वासो की लय तथा दिमाग के विचारो को अंकुश में रखने का काम करते है। 'योग' शरीर की कसरत है। मन का नियमन है और आध्यात्मिक आगमन है। इस लिये ११ दिसम्बर २०१४ के दिन २१ जून को अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। संक्षिप्त में **'IDY'** कहा जाता है। इसी के भाग स्वरुप इस दिन जगह जगह पर योग - आसन के शिबिर होते है। स्वस्थ रहने के लिए इसमें कई लोग भाग लेते हैं। ''पहेलु सुख ते जाते नर्या'' यदि शरीर को स्वस्थ और निरोगी रखना है तो योग करना अच्छी बात है।

पूरे गीता में योग सूत्र है। उदाहरण स्वरुप समत्वे योग उच्चते, योग कर्मसु कौशलम् कर्म में कुशलता ही योग है। योगी की दो अवस्था होती है। कर्मयोगी और ज्ञान योगी होता है। गीजा स्वयं अविनाशी योग है। जो र्व प्रथम भगवानने सूर्य को और बाद में मनुने इक्ष्वाकु को कहे थे। वे देखे तो योग सूर्य है। तभी से जो योग मुक्त है वह रोग मुक्त है। भोग मुक्त है। योग करे वह योगी-योगी बने उपयोगी। भक्ति की दृष्टि से देखे तो यग अर्थात् भगवान के साथ जुडना।

आज मनुष्य के पास समय नहीं है। धन, सम्पत्ति और पैसा मनुष्य के पास है। लेकिन शांति ही नही है। और शांति प्राप्त करने के लिए हमारे ऋषि-मुनियो ने जंगल में जाकर श्वास को अपने इष्टदेव के लिए रोककर हजारो वर्ष तप तपस्या किये है। इस प्रकार प्राणायाम के द्वारा मंत्रोपचार के साथ शांति एवम् सत्त्वेमन से दिल से भगवान की भक्ति किये, भगवान से साक्षातकार करके लम्बी उम्र तथा आरोग्यमय जीवन प्राप्त किये।

संस्कृत धातु यूजु पर से योग शब्द बना है युज का अर्थ है जुडना, आत्मा का परमात्मा के साथ जोडने की शास्त्र वर्णित प्रणाली में योग का समावेश होता है।

महाराज जब वन विचरण के समय बुटोलनगर से आगे उत्तर दिशा में जाते हुए रास्ते में उन्हे गोपालयोगी मिलते है और उसे योग शास्त्र का अध्ययन कराते है। भक्तचिंतामणी पाठ ३० में कहा गया है। - यहां गोपालयोगीने पास रे, कर्यो योग शास्त्रनो अभ्यास रे।

कावे जे कोई अष्टांग योग रे,
शिष्या जेथी मटे भवरोग रे ॥
मोटी बुद्धिवाला घनश्याम रे,
शिष्या योग अंग कहुं नास रे।
यम नियम आसन जेह रे,
प्राणायाम प्रत्याहार तेह रे ॥
धारणा वणी ध्यान जे कहिये रे,
आठमुं अंग समाधिलईये रे ॥

महाराज उसके बाद जब लोज में रहते थे। तब भी प्रत्येक को योग कला सिखाते थे। ये बात भी भक्तचिंतामणी पाठ-४४ में वर्णित है।

शरीर स्वस्थ रखने के लिये व्यायाम जरुरी है। उसी प्रकार मन को स्वस्थ रखने के लिये योग आवश्यक है।

आहार-विहार सावधानी, सोते उठने में नियमितता, वाणी का संयम, सकारात्मक सोच, अहिंसा, जैसे यम-नियम का पालन करने के लिये योग का विशेष आग्रह किया गया है।

ईष्टदेव के मंत्रोपचार के साथ योग करने से आन्तरिक बुद्धि को बल प्राप्त होता है। जिससे जीवन में कठिन परिस्थिति में सही निर्णय लेने की शक्ति मिलती है। तनाव मुक्त रह सकते है। हर रोग से कायमी मुक्ति मिल सकती है। श्वासोश्वास का नियमन करके शरीर स्वसथ बना सकते है। मन का शुद्धीकरण कर सकते है।

"मनुष्याणोनाम् बंधन मोक्षयो कारण"

अर्थात् मनुष्य का मन ही मोक्ष या बंधन के लिये जिम्मेदार होता है।

इस लिये शरीर को ध्यान मग्न और योगमग्न बनाने हेतु, स्वस्थ रहने की महिमा, समझ में चेतना और जागृति लाने के लिये प्रत्येक मनुष्य की नैतिक जिम्मेदारी है। जो हमें "IDY २१ जून" की याद दिलाता है।

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट
www.swaminarayan.in
भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५
● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख,
समाचार एवं फोटोग्राफस ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस
magazine@swaminarayan.in

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में भव्य हिंडोला का दर्शन

भरतखंड के राजाधिराज परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से उसी प्रकार अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में श्रावण मास भव्य हिंडोला, सुखा मेवा, हरे मेवे - फल, चोकलेट, पवित्रा, फूल आदि विविधप्रकार के भव्य हिंडोला बनाकर शायं को ठाकुरजी को झूलाने के काम में आता था। कई श्रद्धावान प्रेमी हरिभक्त हिंडोला के यजमान बनकर महालाभ लेकर धन्य हुए । पूरे सेवा में स्वामी हरिचरणदासजी (कलोल), भंडारी जे.पी. स्वामी, भक्ति स्वामी, शा. नारायण मुनि स्वामी और कोठार स्टाफ आदिने सुंदर सेवा प्रदान किये। (चेतन जंगले - कोठार ओफिस)

मोरबी श्री स्वामिनारायण मंदिर (पुराना मंदिर) कथा के असवर श्री स्वामिनारायण मासिक के आजीवन सदस्यो की सौजन्य भेट

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से मोरबी श्री स्वामिनारायण मंदिर (प्राचीन) में सेवा पूजा करते सां. राजकुंवरबा - उषाबा की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण अंक के १५ सदस्यो ने ५० प्रतिशत, सौजन्य सेवा प.भ. मनोजभाई उलीयावाला परिवारने किया था। जिन्हे अत्याधिक धन्यवाद, उन्हे प.पू. लालजी महाराजश्री के अन्तकरण से आशीर्वाद मिले।

(प्रति अनिल दुधरेजीया - ध्रांगध्रा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापुनगर) कथा एवम् हिंडोला उत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा और समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी की प्रेरणा से प.भ. लालजीभाई पूनाभाई डोबरियाने मुख्य यजमान पद पर तथा मनसुखभाई एम. शेलडीयाने सहयजमान पर से श्रावण मास में ता. १२-८-१८ से १८-८-१८ तक कोठारी स्वामी हरिकृष्णदासजी के वक्तापद से श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण धूमधाम से मनाया गया। कथा में आने वाल प्रसंग को भी उत्साहपूर्वक मनाया गया। अंतिम तीन घंटे में हरिनाम स्मरण धुन की गयी थी। तत्पश्चात सभी भक्तो को यजमान की तरफ से भोजन प्रसाद कराया गया। इस अवसर पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री बहनो वाले मंदिर में बहनो को आशीर्वाद देने के लिये आयी थी।

तारीख २९-७-१८ से २८-१८ तक इलेक्टानिक के नव कलात्मक हिंडोला का दर्शन तथा समाज उपयोगी प्रदर्शन किया गाय था। जिस में पर्यावरण, वृक्षा रोपण, नशा मुक्ति, अक्षरधाम की ट्रेन आदि का सुन्दर प्रबन्धकिया गया था। जिसका हजारो मुमुक्षुओने दर्शन किया तथा ज़ीवन को धन्य किये। इस अवसर पर श्री नरनारायणदेव युवक-युवती मंडल की सेवा प्ररणा स्वरुप थी। (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल श्रीमद् सत्संगि जीवन पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा और समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने बोपल में श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.भ. खीमजीभाई भवानभाई (मेडावाला) के पुत्रो श्री गोविंदभाई तथा श्री रतिभाईने यजमान पद से श्रीमद् सत्संगिजीवन रात्रिय सप्ताह पारायण ता. १३-८-१८ से १९-८-१८ तक स.गु. शा.स्वामी ध्यानप्रियादसजी (बावला मंदिर) ने वक्तापद किये।

पुरुषोत्तममास में बोपल, बावला, वणझर श्री स्वामिनारायण मंदिर के उपक्रम पर इसी ग्रन्थ की कथा हरिद्वार में हुई थी। इसी क्रम में यजमान परिवार के संकल्प से उपरोक्त तीनो मंदिरो के आस-पास रहने वाले हरिभक्तोने कथा श्रवण का लाभ लिये।

पारायण के बीच कालुपुर मंदिर के महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी और मूली के व्रजवल्लभ स्वामी आदि संत भी पधारे थे।

यहाँ के मंदिर के संत धर्मसुतदासजी और बावला मंदिर के संतोने नंद संतो द्वारा रचित सुंदर कीर्तन गान किया गया था। कोठारीश्री अमृतभाई पटेल के साथ सहयोगी हरिभक्त श्री अरविंदभाई, नवीनभाई, राजूभाई, विपुलबाई, महेन्द्रबाई और श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने रात्रि का प्रसाद (फलाहार)

और अन्तिम दिन भोजन प्रसाद में सुंदर सेवा प्रदान किये थे।

बापुपुरा (माणसा)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा और समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से एवम् स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गाँधीनगर से-२) की प्रेरणा से यहाँ बापुपुरा गाँव में ता. २४-८-१८ के दिन प.भ. चौधरी जेशंगभाई सवाभाई के जीवन अमृतपर्व के अवसर पर सत्संग सभा का सुंदर आयोजन किया गया था, संतो ने भगवान श्रीहरि की लीला चरित्र की बात किये थे। बापुपुरा गाँव तथा आस-पास के गाँव के १५०० जितने हरिभक्तोने भगवान श्री स्वामिनारायण के महामंत्र का धून-कीर्तन करके अमृतवाणी काल ाभ लेकर प्रसाद ग्रहण करके धन्य हुए। (पंडित चौधरी - बापुपुरा)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर रणजीतगढ

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा और समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा यहाँ रणजीतगढ मंदिर के संत स.गु. स्वामी भक्तिहरिदासजी की प्रेरणा से ता. २७-७-१८ को गुरुपूर्मिमा उत्सव उल्हास पूर्वक मनाया गया। सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के चित्र प्रतिमा का पूजन संत हरिभक्तोने विधिवत रुपसे पूर्ण किये।

पू. स्वामीने भगवान श्री स्वामिनारायणने अपने जगह पर प्रस्थापित किये गये धर्मवंशी आचार्य महराजश्री और परम्परा के अपने आचार्य महाराजश्री ने सत्संग को स्वयं का मानकर अपना जीवन समर्पित किये है। श्रीहरि के तीन गूढ संकल्पो देव, आचार्य और शास्त्र ये अपनी अनोखी परम्परा है। ऐसी ही वेद परम्परा भी गुरु परम्परा को अच्छे से समझायी है। सभी हरिभक्त प्रसाद लेकर अपने-अपने घर गये।

(प्रति. अनिल दूधरेजिया - ध्रांगध्रा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ध्रांगध्रा

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा और समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से ध्रांगध्रा में अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा प्रत्येक सोमवार को अलग-अलग हरिभक्तो के घर नियमित सभा होती है।

ता. २०-८-१८ को देव-आचार्यश्री के निष्ठावान प.भ. नटुभाई पूजारा के घर सभा हुई जिस में मूली मंदिर के संत स्वामी धर्मजीवनदासजी तथा भक्ति हरि स्वामी आदि संत मंडल ने कथा वार्ता, कीर्तन धून का सुंदर लाभ ५०० हरिभक्तो को दिये थे। (प्रति. अनिल दूधरेजिया - ध्रांगध्रा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (प्राचीन) मोरबी सत्संग सभा

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री के प्रिय आशीर्वाद से यहाँ मोरबी में ता. २८-७-१८ को अहमदापाद श्री नरनारायणदेव और मूली श्री राधाकृष्ण देव और धर्मकुल के अत्यधिक निष्ठावान प.भ. मनोजभाई चंदुलाल दयालजीभाई राणपरा (उलीयापरा) के माताश्री अ.नि. मुक्ताबेन की प्रथण पुण्यतिथि के अवसर पर सां. राजकुंवरबा, सां. उषाबा और उनेक शिष्य मंडल की प्रेरणा से सुंदर महिला सत्संग हुआ था। ५०० से अधिक बहनोने सांख्ययोगी बा के वक्ता पद पर से लाभ लिये थे।

अ.नि. मुक्ताबा के परिवार में मूल संप्रदाय और उसकी परम्परा धर्मकुल की अनहद निष्ठा का अद्‌भुत उदाहरण और माँ इस परिवार में कैसी अद्रभूद पात्र है। जो चलचित्र द्वारा दिखाया गया था।

सभा संचालन का कार्य अनिल दूधरेजियाने किया था। (प्रति अनिल दुधरेजिया - ध्रांगध्रा)

विदेश सत्संग समाचार

शिकागो (इटास्का) श्री स्वामिनारायण मंदिर द्विदशाब्दी महोत्सव मनाया गया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् परम पूज्य बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से और यहाँ के मंदिर के महंत शा. स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी, पूजारी स्वामी शांतिप्रकाशदासजी, शा. स्वा. भक्तिनंदनदासजी (जेतलपुर) आदि संतो के मार्गदर्शन और प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो (इटास्का) का द्विदशाब्दी महोत्सव उत्साह पूर्वक मनाया गया।

इस महोत्सव के उपलक्ष्य में २०० घंटे का महामंत्र धून, प्रत्येक एकादशी और पूर्णिमा को महापूजा और सभा का आयोजन किया गया था। तथा विष्णुसहस्त्रनाम महायज्ञ श्री स्वामिनारायण महामंत्र लेखन बुक के कारण किया गया था। विशाल संख्या में हरिभक्तोने उपरोक्त आयोजन में भाग लेकर उत्याधिक धन्यता का अनुभव किये थे। इस अवसर पर निज

मंदिर, सभा मंडप, सिंहासन के चारो तरफ मारबल, किचन तथा संत निवास का रिनोवेशन किया गया । महोत्सव के अन्तर्गत श्रीहरियाग, पोथीयात्रा, शोभायात्रा नव दिन तक लगातार सुबह और सांय श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण रिध्धि-सिध्धी माता की प्राण प्रतिष्ठा श्री गणेशजी, श्री हनुमानजी के नये शिखर कलश, गुलाब की असंख्य पंखुडियो से ठाकुरजी का राजोपचार, सांस्कृतिक कार्यक्रम, रंगोत्सव, संहिता पाठ, धर्मकुल पूजन, संत पूजन, हिंडोला दर्शन, नव-नव दिन नये छप्पन भोग और अन्नकूट महाभिषेक, रक्तदान सेवा, युवक मंडल तरफ से सुबह-शाम महाप्रसाद वितरण आदि आयोजन उल्लास पूर्वक किया गया।

ये द्विदशताब्दी महोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. डाह्याबाई और असुमतिबेन पटेल (सापड) और पारायण के मुख्य यजमान प.भ. केयूरभाई पंकजभाीप टल (वडू) परिवार था। दूसरे अन्य सेवाओ का हरिभक्तोने लाभ लिया।

श्रीमद् सत्संगिभूषण नवान्ह पारायण के वक्ता पद पर महंत शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी, शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजी (जेतलपुर) पधारे थे। दोनो वक्ताओ के मुख से संगीत के सुंदर लय में हरिभक्त कथा सुनकर धन्य हो गये। साथ ही मूली मंदिर के सुव्रत स्वामी और निलकंठ स्वामीने कथा-कीर्तन करके भक्ति की धारा बहा दिये।

देश-विदेश से अनेक हरिभक्त और २० से अधिक संत जिस में पू. शास्त्री पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) आदि आये थे। तथा उन लोगो ने श्रीहरि के अनुपम अलौकिक लीलाचरित्र का वर्णन किये। इस महोत्सव के अन्तर्गत श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने अपने प.पू. लालजी महाराजश्री का २१ वाँ प्रागटउत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और पू. श्रीराजा और प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ सभा में केक काटकर हजारो हरिभक्तो की उपस्थिति में विशालता से मनाया गया था।

प.पू. लालजी महाराजश्रीने यहाँ के सत्संग और युवक मंडल की सुंदर प्रवृति का बखान करके आशीर्वाद दिये।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महारजाश्रीने यहाँ के संत मंडल, देश-विदेश से आये हरिभक्त, दाता, स्वयं सेवक, किचन कमेटी के सदस्य का बखान करके आशीर्वाद दिये। इसके बाद आई.एस.एस.ओ. संस्था के नये प्रोजेक्ट ''देवस्य'' जो अपने भविष्य की पीढी हेतु, आयोजित की गई है। इस में सभी से सहयोग की अनुरोधकिया गया है।

शिकागो मंदिर द्वारा नये प्रकाशन ''महाराज के समय के हरिभक्त'' और पिछले बीस वर्षो से मंदिर का इतिहास समाहित कर ले ऐसा 'सोवनिनियर' का प.पू.ध.धु. आचार्यम हाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथो द्वारा विमोचन विधिवत रुप से पूर्ण किया गया। तमाम प्रकार की सेवा करने वाले हरिभक्तो का सन्मान किया गया था। अंत में प.भ. जगदीशभाई पटेल (आई.एस.एस.ओ. के प्रमुख)ने आभार व्यक्त किया।

(वसंत त्रिवेदी - शिकागो)

श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरेन्टो (केनेडा) का भव्य दशाब्दी महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् परम पूज्य बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा ब्रह्मनिष्ठ संत और हरिभक्तो के प्रयास से श्री स्वामिनारायण हिन्दू मंदिर कल्चर सेन्टर टोरेन्टो आई.एस.एस.ओ. केनेडा का दशाब्दी पाटोत्सव उल्लास से मनाया गया था।

ता. २-८-१८ के कथा प्रारम्भ के सायं को ४ बजे पोथीयात्रा निकाली गयी। ता. २-८-१८ से ६-८-१८ तक स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित ''श्रीहरि स्मृतिकाव्य'' पंचान्ह पारायण शा. स्वामी योगीचरणदासजी और शा.स्वा. व्रजभू,णदासजी के वक्तापद से हुई।

ता. ४-८-१८ को शायं में सास्कृतिक कार्यक्रम बालको और युवा विद्यार्थीयों, सत्संगी बहनो द्वारा अपने सम्प्रदाय की स्त्री रत्न, जीवुबा, लाडूबा की बाते, कृष्ण भक्त नृत्य, नरसिंहा की हुंडी, गरबा, प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री का संकल्प ''आंगन'' प्रोजेक्ट का समान आयोजन किया गया।

ता. ५-८-१८ के दिन प्रातः ठाकुरजी के सामने समूह महापूजा श्री विरलभाई, अभिषेक भगत और गणपत भगतने किया था।

ता. ६-८-१८ के पाटोत्सव के शुभ दिन पर प्रातः ८ बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कर कमलो द्वारा श्री हरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार महाभिषेक निज मंदिर में बिराजमान ठाकुरजी का पूजन आदि विधिवत रुप से सम्पन्न हुआ।

कथा की पूर्णाहुति आरती के बाद सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की पूजा-अर्चना आरती यजमान हरिभक्तो द्वारा किया गया। संतो की पूजा की गयी थी। यजमान श्री की तरफ से चाँदी के सिक्के से श्रीहरिकृष्ण महाराज की रजत तुला प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कर कमलो

द्वारा की गई थी । एन.एन.डी.वाई.एम. आयोजित इसो क्रिकेट टूर्नामेन्ट के विजेता टीम ने मेन आफ द मैच, बेस्ट बालर, बेस्ट बैस्टमेन, एम्पायर कमिन्टेटर इत्यादि ट्राफी, मेडल, प.पू. महाराजश्री के कर कमलो द्वारा प्रदान किया गया था ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने अपने सत्संगी युवको की प्रवृति की प्रशंसा करके हृदय से आशीर्वाद प्रदान किये तथा बताये मंदिर के विकास में, सत्संग में सभी छोटे-बड़े हरिभक्त भाग लेकर सत्संग को मनाये आप सभी तन, मन और धन से सम्पन्न बने सभी की श्रीहरि मंगल करे एसी श्री नरनारायणदेव प्रार्थना किये ते । प.पू. महाराजश्रीने क्रिकेट के स्पोन्सर मेहमानो, महानुभावो, मिडया और यजमानश्री का सुंदर सम्मान करके आशीर्वाद प्रदान किये ।

समस्त सत्संगी बहनो द्वारा बनाये सुन्दर छप्पन भोग अन्नकूट को ठाकुरजी के सामने रखकर प.पू. महाराजश्री के साथ यजमानश्रीने आरती उतारा । पूरे अवसर में हरिभक्त यजमान बनकर और उत्सव में भाई-बहन और बड़े और हरिभक्तो की सेवा प्रेरणा दायक थी । अन्त में प्रेसि. दशरथभाई चौधरी ने आभार व्यक्त किया । सम्पूर्ण उत्सव का सुंदर संचालन प.भ. रसिकभाई पटेलने कुशलता पूर्वक सम्भाला था । (भाईलालभाई - टोरन्टो)

छपैयाधाम पारसीप की गुरुपूर्णिमा महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् परम पूज्य बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री एवम् तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद सतथा पारसीप मंदिर के महंत स्वामी कीप्रेरणा से अपने छपैयाधाम हिन्दू श्री स्वामिनारायण मंदिर में २८-७-१८ शनिवार सायं ५ बजे से ८ बजे संत हरिभक्तोने गुरुपूर्णिमा महोत्सव का सुंदर आयोजन किये थे । निज मंदिर में ठाकुरजी के समक्ष महामंत्र धून, कीर्तन, भक्ति करके प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के चित्र की पूजा करके स्वामीने गुरु पूर्णिमा और स्वामिनारायण संम्प्रदाय में स्य श्रीहरिने स्वयं के स्थान पर प्रस्थापित किये गये धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की गुरु परम्परा वेद परम्परागत बताये थे । यजमान परिवार का सन्मान करके ठाकुरजी को थाल आरती नियम करते सभी ने प्रसाद ग्रहण किया तथा धन्य धन्य हुए । (प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया गुरुपूर्णिमा महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् परम पूज्य बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री एवम् तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा यहाँ के मंदिर मे सेवा पूजा करने वाले भरत भगत के मार्गदर्शन से अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में २८ जूलाई को सायं ५ से ८ बजे के बीच गुरु पूर्णिमा के अवसर पर ठाकुरजी के सामने सर्व प्रथम युवा हरिभक्तो ने श्रीहरि नाम स्मरण धून कीर्तन करके सभा में अपने गुरु जैसे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के चित्र का पूजन और अर्चन यजमान परिवार भी साथ में रहे थे ।

भरत भगतने सम्पूर्ण सम्प्रदाय के गुरु स्थान पर विराजमान धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री और धर्मकुल की महिमा और महात्म सभी को सरल भाषा में समझाये । इसके बाद यजमानो का सन्मान किया गया । थाल और शयन आरती करके ठाकुरजी को पोढाडी नियम करके सभी प्रसाद लेकर अपने घर गये । (प्रविणभाई शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्यूस्टन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् परम पूज्य बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री एवम् तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा ह्यूस्टन मंदिर के पूजारी सुव्रत स्वामी और महेन्द्र भगत और हरिभक्तो के सुंदर सहयोग से अपने ह्यूस्टन श्री स्वामिनारायण मंदिर में १४ जुलाई शनिवार सायं को रथयात्रा महोत्सव भव्यता से मनाया गया था । संत-हरिभक्तोने रथ को सजाया था । श्री नीतीनभाई शुक्लने संस्कृत के श्लोक बोलकर ठाकुरजी को बिराजित किये । भजन-कीर्तन करते हुए अष्ट लक्ष्मी मंदिर पहुंचे थे । अंत में अपने मंदिर में ठाकुरजी को रथ के साथ लाकर आरती उतारी गयी थी ।

यजमान परिवार सुंदर लाभ लेकर धन्य हुए । श्री हनुमानजी महाराज का समूह आरती करके हनुमान चालीसा - जन मंदिर पाठ किया गया । यजमान परिवार का सन्मान करके ठाकुरजी को थाल चढाकर नियम करके सभी लोग प्रसाद लेकर स्वगृह की तरफ गये । (प्रविण शाह)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

(१) टोरन्टो (केनेडा) मंदिर के दसवे पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी की पूजन विधि करते हुए तथा युवक मंडल के सदस्यो के साथ दर्शन देते प.पू. आचार्य महाराजश्री। (२) लेस्टर (यू.के.) मंदिर के १४ वे पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक का दर्शन तथा सभा का लाभ उठाते हुए हरिभक्त (३) बोस्टन (अमेरिका) मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर अन्नकूट आरती दर्शन और १५ वी अगस्त को मनाते हुए संत-हरिभक्त लोग (४) श्रावण मास के उपलक्ष में पारसीपनी (अमेरिका) मंदिर में कथा पारायण। (५) श्रावण मास के दरम्यान दियोदर मंदिर में कथा पारायण करती महिला हरिभक्त।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

अमेरिका के ज्योंजीया में ५२२ एकड भूमि पर आकर ले रहा "देवस्य"

खात मुहूर्त

Follow Us On

Praful Kharsani